मीलाद मनाना
ऐ़न
ईमान है
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

मीलाद मनाना ऐ़न ईमान है

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०-आज़म बेग क़ादरी

09897626182

नाम किताब–**मीलाद मनाना ऐ़न ईमान है**

मुअ़ल्लिफ़– **डा० आज़म बेग क़ादरी**

सने इशाअ़त– नवम्बर–**2018** रबीउल–
अव्वल (1440 हिज़्री)

कम्पोज़िंग– जुनैद अ़ली & ज़ैनुल आ़बदीन

नाशिर– सइयद ज़हीरउद्दीन साहब

क़ीमत– **80/-** रूपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक डिपो मकनपुर (कानपुर) 09695661767	**जावेद बुक सेलर** करहल (मैनपुरी) 09634447000
अनवार उर्दू बुक डिपो बिसात खाना मैनपुरी 09319086703	**उर्दू बुक हाउस** तलाक महल (कानपुर) 09389837386,09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न०शुमार सफ़हा

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर व बातिन में तइयब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम के सरदार और अपने नूर से हुज़ूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अतहार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया -ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तअ़ाला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

अ़र्ज़े मुअ़ल्लिफ़

रबीउ़ल अव्वल का महीना बड़ी बरकतों और रहमतों और खुसूसी अहमियत व अ़ज़मत का हामिल है इस मुबारक महीने में रहमते दो आ़लम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) दुनियाँ में तशरीफ़ लाये इस महीने में हम मुसलमान महफ़िले मीलाद व जुलूस व कुरान ख़्वानी की मजलिसों का इहतिमाम करते और हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से सच्ची अ़क़ीदत व मुहब्बत का इज़हार करते हैं मजलिसे मीलादुन्नबी में आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की शानो अ़ज़मत, सीरतो किरदार व मोअ़जिज़ात व कमालात और विलादत व सआ़दत का ज़िक्र करते और अपने क़ल्ब को मुअ़त्तर और मुहब्बते रसूल की हलावत से लवरेज़ करते और गुलामाने मुस्तफ़ा बड़े अ़दबो इहतिराम और अ़क़ीदत व मुहब्बत के साथ मजलिसे मीलादुन्नबी में शिर्कत करते हैं और महबूबे खुदा के ज़िक्रे जमील से

अपने कुलूब और ज़हनों को मुनव्वर व मुअ़त्तर करते हैं और घरों व गलियों और बाज़ारों में रोशनी का इहतिमाम करते और लंगर व सबील का भी इहतिमाम होता है और ये तमाम अफ़आ़ल बाइसे ख़ैरो बरकत व सवाबे दारैन व अज्रे अ़ज़ीम है

हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल इन्सान कुफ़्र व शिर्क और बुत परस्ती के अंधेरों में ग़र्क़ था ज़ुल्म व जहालत व गुमराही व शैतानियत और क़बाइली रस्मो रिवाज इन्सानी मुआ़शरे पर मुहीत था क़त्लो गारत और ख़वातीन की बेहुरमती और उन पर बेरहमी, बदसुलूकी इन्तिहाई उरूज़ पर थी इन हौलनाक व दर्दनाक व जाहलियत व शैतानियत के हालात में हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) इन्क़िलाबी व इंसानियत व राहे हिदायत का पैगाम लेकर दुनियाँ में तशरीफ़ लाये जिससे हक़ ज़िन्दा हुआ और बातिल परस्त हुआ इसलिये विलादते मुस्तफ़ा की सुहानी और बाबरकत घड़ी तमाम साअ़तों पर अफ़ज़ल व अ़ाला है।

हम तमाम मुसलमानों को अल्लाह तआ़ाला ने नेअ़मते उ़ज़मा मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की शक्ल में हमें अ़ता फ़रमाई तो कायनात में इससे बढ़कर पुर मसर्रत साअ़त यक़ीनन कोई नहीं हो सकती इसलिये इस पुर मुबारक दिन की हम तमाम सुन्नी मुसलमान यादगारे विलादते मुस्तफ़ा मनाते हैं और नेअ़मतें उ़ज़्मा का शुक्र अदा करते और विलादते मुस्तफ़ा की खुशी मनाते हैं और विलादते मुस्तफ़ा के दिन की यादगार मनाना और मुस्तफ़ा की शानों अ़ज़मत व सीरतो किरदार व मोअ़जिज़ात व कमालात का तज़किरा करना ये तमाम अफ़आ़ल बाइसे अज्रे अ़ज़ीम और ऐ़न ईमान है।

फ़कीर

डा० आज़म बेग क़ादरी

09897626182

ईद मीलादुन्नबी कुरान की रोशनी में

कुल बिफ़्दलिल्लाहि व बिरह़्मतिही फ़बिज़ालिका फ़लयफ़्रहू हुवा ख़ैरुम मिम्मा यजमऊ़न०– (सू०–युनुस–58)

तर्जुमा–(ऐ महबूब) आप फ़रमा दीजिये (ये सब कुछ) अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत के बाइस है (जो बेअ़सते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के ज़रिये तुम पर हुआ है पस मुसलमानों को चाहिये कि इस पर खुशियाँ मनायें ये उससे बेहतर है जो वो जमा करते हैं।

–: तफ़ासीर :–

बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि मज़कूरा आयते करीमा में अल्लाह के फ़ज़्ल से मुराद कुरान मजीद है और रहमत से मुराद हुज़ूरे अक़दस (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते गिरामी है जैसा कि

अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है- वमा अरसलनाका इल्ला रहमतिल लिल आ़लमीन (ऐ महबूब) हमनें तुम्हें तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा (सू०-अम्बिया-107) और अगर बिल फ़र्ज़ इस आयत में मुतइ़यन तौर पर फ़ज़्ल व रहमत से मुराद सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते मुबारका न भी हो तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ीम तरीन फ़ज़्ल और रहमत हैं (सिरातुल जिनान-4/340)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) इस आयत के ज़िमन में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से मुराद इ़ल्मे क़ुरान है और अल्लाह की रहमत से मुराद हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते पाक है जैसा कि फ़रमाने खु़दावन्दी है-वमा अरसलनाका इल्ला रहमतिल लिल आ़लमीन। (दुर्रे मन्सूर-3/934) (रूहुल मआनी-10/141)

इस आयत में अल्लाह के फ़ज़्ल से मुराद कुरान मजीद और रहमत से मुराद हुजूरे अनवर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते अक़दस है जैसा कि रब ने फ़रमाया वमा अरसलनाका इल्ला रहमतिल लिल आ़लमीन और अल्लाह का फ़रमान इस फ़ज़्ल और रहमत पर खुशी मनाना ये उससे बेहतर है जो वो जमा करते है इसका मफ़हूम ये है कि दुनियाँ का माल व मताअ़ और दौलत सब फ़ानी हैं और अल्लाह की अ़ज़ीम नेअ़मत यानी फ़ज़्ल व रहमत पर खुशी मनाने का सवाब बाक़ी और ग़ैर फ़ानी है (तफ़्सीर नईमी–11/377) सू०–निसा की आयाते करीमा भी इसी तरह इशारा कर रही है कि– अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती यक़ीनन चन्द एक के सिवा तुम (सब) शैतान की पैरवी करने लगते। (सू०–निसा–83)

हासिल कलाम ये है कि जो लोग जश्ने ईद मीलादुन्नबी पर एतराज़ करते हैं उन्हें मज़कूरा आयते करीमा से सबक़

लेना चहिये कि रब तआ़ला खुद कुरान मजीद में फ़रमां रहा है कि अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और रहमत जो हमें मयस्सर हुई उस पर हमें खुशियाँ मनाना चाहिये और विलादते मुस्तफ़ा की वो सुहानी और बा बरकत घड़ी को याद करना और खुशियाँ मनाना ये मज़बूत ईमान की दलील और हुजूर से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत की अ़लामत है और विलादते मुस्तफ़ा की खुशी से बढ़कर कायनात में कोई दूसरी खुशी नहीं और ईद मीलादुन्नबी की खुशी कायनात की तमाम खुशियों और मसर्रतों पर मुक़द्दम है इसलिये हमें चाहिये कि विलादते मुस्तफ़ा की वो सुहानी और बा बरकत घड़ी की यादगार मनाना चाहिये और बड़े इहतिमाम व खुलूस और इंतिहाई खुशी के साथ जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाना चाहिये।

यानी अललाह का फ़ज़्ल और रहमत हमें अगर न मिलती तो यक़ीनन हम गुमराह और शैतान की पैरवी करने वालों में से होते और कुरान अल्लाह तआ़ला की

तरफ़ से हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) पर नाज़िल किया गया और ये कुरान नसीहत व शिफ़ा व हिदायत और रहमत है और इस उम्मत के लिये अ़ज़ीम तोहफ़ा है और मुसलमान के ज़ाहिर व बातिन को पाको साफ़ करने वाला है और दिलों को शिफ़ा देने वाला है और मोमिनो की रूह के लिये हिदायत है और उनके के जिस्मों के लिये रहमत है इस कुरान में शरीअ़त है तरीक़त है हक़ीक़त है और माअ़रिफ़त है और शरीअ़त का तअ़ाल्लुक जिस्म से है और तरीक़त का तअ़ाल्लुक दिल से है और हक़ीक़त का तअ़ाल्लुक रूह से है और माअ़रिफ़त का तअ़ाल्लुक़ सर (यानी फ़िक्र व ख़्याल) और अच्छी बात से है।

और रहमत यानी हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते पाक जिनके ज़रिये से हमें तमाम नेअ़मतें अ़ता हुईं यानी- कुरान व सुन्नत व शरीअ़त व तरीक़त व हक़ीक़त और माअ़रिफ़त और जन्नत से जैसी अ़ज़ीम नेअ़मत भी उनके तवस्सुल और शफ़ाअ़त से मिलेगी तो अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है ऐ महबूब-

अपनी उम्मत को हुक्म दो कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत के मिलने पर खूब खुशियाँ मनाऐं और खुसूसी खुशी उन तारीख़ों में मनाऐं जिनमें ये नेअ़मतें आयीं यानी रमज़ान की शबे क़द्र और रबीउ़ल अव्वल की बारहबीं तारीख़ यानी रमज़ान में कुरान आया और रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं तारीख़ में रहमतुल लिल आ़लमीन दुनियाँ में तशरीफ़ लाये।

और अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत पर खुशी मनाना तुम्हारे दुन्यावी जमा किये हुये माल व मताअ़ व मकान व जायदाद और जानवर व खेती बाड़ी बल्कि औलाद बग़ैराह की खुशी से भी बेहतर है क्योंकि इस खुशी का सवाब और नफ़ा क़वी और दायमी है और दुनियाँ व आख़िरत में फ़ायदेमंद है और ये खुशियाँ दीनी हैं और दीनी खुशी यक़ीनन दुनियाँ से बेहतर है और अल्लाह तआ़ला ने खुशी मनाने के लिए किसी क़िस्म की क़ैद नहीं लगाई कि ईद मीलादुन्नबी की खुशी किस तरह मनाई जाये।

बल्कि अपने ज़ॉक़ व जज़्बात और अपनी अक़ीदत व मुहब्बत के मुताबिक़ जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाओ।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर खुशी मनाना उससे बेहतर है जो वो जमा करते है इस आयते मुबारका के दूसरे पहलू और मफ़हूम पर हम ग़ौर करें कि यहाँ जमा से मुराद कौन कौन सी अशया हैं तो पता चलता है इन्सान दुनियाँ में माल व असबाब जमा करता है और आख़िरत के हवाले से नेक आअ़माल जमा करता है जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, ख़ैरात व दीगर नेक आअ़माल और रब तआ़ला ने इस बात का खुलासा नहीं किया बल्कि ये इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत पर खुशी मनाना उससे बेहतर है जो वो जमा करते हैं तो मुसलमान दुन्यावी माल के साथ साथ नेक आअ़माल भी जमा करता है तो वाज़ेह हुआ कि ईद मीलादुन्नबी पर खुशियाँ मनाना दुन्यावी माल व असबाब के अलावा नेक आअ़माल जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, सदक़ात, ख़ैरात व दीगर नेक आअ़माल से भी बेहतर है।

क्योंकि अल्लाह तआ़ाला की पहचान हमें मुस्तफ़ा जाने रहमत से मिली ईमान व दीन इस्लाम और कुरान हमें सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के तुफ़ैल हमें मिला और रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात, सदक़ात ख़ैरात, व दीगर नेक-आअ़माल वग़ैराह हमें रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के सदक़े व तुफ़ैल ही अ़ता हुये हैं तो साबित हुआ कि मीलादुन्नबी से बढ़कर कायनात में कोई खुशी नहीं।

इसलिये जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाना और विलादते मुस्तफ़ा की यादगार मनाना, जुलूस निकालना, खुशियाँ मनाना, चिरांगां करना, नात ख़्वानी, सबील करना, सब जाइज़ व सवाबे दारैन और बाइसे ख़ैरो बरकत हैं और इस पुर मुबारक मौक़े पर खुशियाँ मनाना मुसलमानों के तमाम जमा कर्दा दुन्यावी माल व नेक आअ़माल से बेहतर है।

ईद मीलादुन्नबी अहादीस की रोशनी में

हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अबू लहब ने हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत की ख़बर अपनी लौंडी सूबिया से सुनी तो उसे आज़ाद कर दिया बाद मौत हज़रत अ़ब्बास ने उसे ख़्वाव में देखा और पूछा कि क्या हाल है तो अबू लहब बोला कि मैं सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला हूँ मगर पीर के दिन मुझ पर अ़ज़ाब हल्का कर दिया जाता है और मुझे प्यास की हालत में कलमे की उँगली से पानी मिलता है कि उसे चूसता हूँ और इसकी वजह ये है कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की विलादत की खुशी में अपनी लौंड़ी सूबिया को आज़ाद कर दिया था। (इब्ने हजर अ़स्क़लानी फ़त्हुल बारी–9/145)

अबू लहब ने हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत की खुशी में अपनी लौंडी सूबिया को जब आज़ाद किया तो साथ ही अपनी उँगली से इशारा भी किया था (कि जा तू आज़ाद है) इसलिये जब अबू लहब मरा तो उसे पीर के दिन उसी उँगली के ज़रिये से पानी दिया जाता था जिस उँगली से उसने इशारा किया था

अबू लहब के मरने के बाद उसके अहले ख़ाना में से किसी ने जब उसे ख़्वाब में देखा तो वो बुरे हाल में था उससे पूछा कि अबू लहब कैसे हो उसने कहा बहुत सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हूँ हाँ मुझे (उस अ़मल की जज़ा के तौर पर) कुछ सैराब किया जाता है कि मैने (विलादते मुस्तफ़ा की खुशी में) अपनी लौंडी सूबिया को आज़ाद कर दिया था।

(बुख़ारी सही–5/115–101)

(अब्दुर्रज़्ज़ाक–अलमुसन्निफ़–7/478–13955)

(बैहक़ी सुनन कुबरा–7/162)

(बैहक़ी शुअ़बुल ईमान–1/261)

(अ़स्क़लानी फ़त्हुलबारी–9/954)

तो मालूम हुआ कि विलादते मुस्तफ़ा की खुशी में लौंडी को आज़ाद करने का बदला और सिला अल्लाह तअ़ाला ने ये दिया कि काफ़िर और मुशरिक यानी अबू लहब के अ़ज़ाब में सोमवार के दिन तकफ़ीफ़ कर दी तो अगर हम विलादते मुस्तफ़ा की खुशी में जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनायेंगे, सदक़ा व ख़ैरात, सबील, चिरागां करेंगे व विलादते मुस्तफ़ा की यादगार शक्ले जुलूस में मनायेंगे उनकी ज़िक्रे मीलाद के जलसे मुनक़्क़िद करेंगे तो हम भी अ़ज़ीम अज्रो सवाब के मुस्तहिक़ होंगे

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत बा सअ़ादत पर दो अ़ालम में खुशियाँ मनाईं गईं तमाम आसमानों और जन्नत के दरवाज़ों को खोल दिया गया रब तअ़ाला ने ज़मीन को हरा भरा कर दिया हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत वाले पूरे साल किसी के यहाँ लड़की पैदा नहीं हुई सिर्फ लड़के पैदा हुये क्योंकि लड़को की पैदाइश पर खुशी व मसर्रत लड़की के मुक़ाबले ज़्यादा होती है

और विलादते मुस्तफ़ा वाले साल आ़लमे दुनियाँ की हर शैः पर अल्लाह तआ़ला की बरकतों और रहमतों का नुजूल हुआ

फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह फ़रमाती हैं जिस रात आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई मैं हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की वालिदा के पास थी मैंने देखा कि ख़ाना-ए-काबा से नूर मुनव्वर हो गया और सितारे ज़मीन के इतने क़रीब आ गये कि मुझे लगा कि कहीं वो मुझ पर गिर न पड़ें। (तबरानी-मुअ़जम कबीर-25/186-457) (सयूती-ख़साइसुल कुबरा-1/110)(इब्ने कसीर-अल विदाया वन निहाया-2/164)

विलादते मुस्तफा के पुर मुबारक मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान को एक ख़ास नूर से रोशन कर दिया था।

सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि जब हुजूर

नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई तो साथ ही एक ऐसा नूर निकला जिससे शर्क़ ता ग़र्क़ सब रोशन हो गया।
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/111)

सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं बेशक मुझसे ऐसा नूर निकला कि उस नूर से मुल्के शाम के महल्लात और वहाँ के बाज़ार इस क़दर साफ़ नज़र आने लगे कि मैने बसरा में चलने वाले ऊँटों की गर्दनों को भी देख लिया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/788–4230)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–24/212–545)
(इब्ने कसीर–अल विदाया वन निहाया–2/164) (सयुती ख़साइसुल कुबरा– 1/111)

सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि विलादते मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की बाबरकत घड़ी अल्लाह तआ़ला ने मेरी आँखों से–

तमाम हिज़ाब उठा दिये और मशरिक़ ता मग़रिब तमाम रूऐ ज़मीन मेरे सामने कर दी गई जिसको मैंने अपनी आँखों से देखा नीज़ मैंने तीन झण्डे देखे एक मशरिक़ में एक मग़रिब में गाढ़ा गया और तीसरा झण्डा काबातुल्लाह की छत पर लहरा रहा था।
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/114)
(इब्ने कसीर–अलविदाया वन निहाया)

हज़रत अबू क़तादा अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से सोमवार के दिन के रोज़े के मुताअ़ल्लिक़ सवाल किया गया तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया इसी दिन मैं पैदा हुआ इसी दिन मैं नबी हुआ और इसी दिन मुझ पर वही उतरी।
(मुस्लिम–3/165–2747)
(बैहक़ी–दलाइल नुबुव्वाह–1/156)
(हाकिम–3/762–4179)

इब्ने साअ़द और इब्ने असाकर ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत की हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने फ़रमाया जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई तो साथ ही एक रोशनी और नूर फैल गया जिससे मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान हर चीज़ रोशन हो गई फिर हुज़ूर सरवरे कौनेन (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने अपने दोनों हाथों से ज़मीन पर टेक लगाई उसके बाद मुट्ठी में मिट्टी को लेकर सर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाया।

(अल विदाया वन निहाया–2/164)

(ख़साइसुल कुबरा–1/111)

जब रहमते दो आ़लम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की विलादत बा सआ़दत का वक़्त क़रीब आया तो अल्लाह तआ़ाला ने हुक्म फ़रमाया कि आसमानों और जन्नतों के तमाम दरवाज़े

खोल दिये जायें और फ़रिश्तों को हाज़िर होने का हुक्म दिया गया और फ़रिश्ते ज़मीन पर उतरे और पहाड़ों का इरतिफ़ाअ़ (बुलंदी, उभार) बढ़ गया और समुन्दर की सतह गहरी और दरिया की र'वानी तेज़ हो गई और शैतान मलऊ़न को तौक़ में ज़कड़ कर उल्टा लटका दिया और उसकी जुर्रियात व नीज़ सरकश जिन्नों को जंजीरों में जकड़ कर बन्द कर दिया गया

और आफ़ताब को नूरे अ़ज़ीम का लिबास पहनाया गया और सत्तर हज़ार हूरों को विलादते मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के इंतिज़ार में खड़ा किया गया और उस साल विलादते मुस्तफ़ा की खुशी में किसी के यहाँ लड़की पैदा नहीं हुई यानी पूरी दुनियाँ में हर अ़ौरत ने लड़का ही जना और कोई दरख़्त ऐसा न था जिसमें फल न आया हो और किसी क़िस्म का कोई ख़ौफ़ न था और दूर दराज़ इलाक़ों और राहों में अ़ाफ़ियत थी और हर तरफ़ अमन था

जब सरकारे दो आ़लम हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई तो सआ़दत की बारिशें होने लगीं और जुलमत व तारीकियाँ छट गईं और सारा जहान नुज़हत (पाकीज़गी) व नूर से माअ़मूल हो गया मलाइका (फ़रिश्ते) आपस में मुबारक बाद देने लगे और हर आसमान में एक सुतून ज़बरजद का क़ायम किया गया और विलादत बा सआ़दत की बदौलत नूर अफ़्शाँ कर दिया गया।

आसमानों में ये सतून मशहूर व माअ़रूफ़ हैं और सफ़रे मेअ़राज में हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें देखा और फ़रमाया ये सुतून मेरी विलादत की खुशी में क़ायम किये गये थे और जिस रात में सइयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई उस रात अल्लाह तआ़ला ने हौजे कौसर के किनारों पर मुश्क की खुशबू से मुअ़त्तर हज़ार दरख़्त उगाये और उनके फलों की खुशबू को अह्ले जन्नत के लिये बुहूर बनाया उस रोज़-

तमाम आसमान वाले अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त से सलामती की दुआ़ माँगते थे और तमाम बुत औंधें मुँह गिर पड़े और ख़ाना-ए-काबा का ये हाल था कि बहुत दिनों तक लोगों ने उससे ये आवाज़ सुनी कि अब अल्लाह तआ़ाला मेरे नूर को लौटा देगा और ज़ॉक़ दर ज़ॉक़ तोहीद परस्त मेरी ज़ियारत को आयेंगे और अब अल्लाह तआ़ाला मुझको जाहलियत से पाक कर देगा।
(ख़साइसुल कुबरा-1/112,113)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया जब आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) मन्ज़िले हमल में थे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के वालिदे गिरामी हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने वफ़ात पाई तो फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया या अल्लाह तेरा नबी सइयदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) तो यतीम हो गये तो रब तआ़ाला ने फ़रमाया-

हम उनके मुहाफ़िज़ व मददगार और वाली हैं और तुम उन पर सलातो सलाम पढ़ो और उनके लिये बरकतें तलब करो और उनके लिये दुअ़ायें माँगो सइयदा आमना फ़रमाती हैं मुद्दते हमल में जब छः माह गुज़र गये तो मेरे पास कोई आया और उसने बा हालते ख़्वाब मुझे बताया ऐ-आमना तुम्हारा महमूल (हमल) सारे जहान से अफ़ज़ल है जब विलादत हो तो इनका नाम मुहम्मद रखना।

सइयदा आमना फ़रमाती हैं कि विलादते मुस्तफ़ा के वक़्त एक बुलन्द नूर चमका फिर मैंने चन्द अ़ौरतों को देखा उन्होंने मुझे अपने झुरमुट में ले लिया मैं इस पर तअ़ाज्जुब ही कर रही थी कि मैंने देखा कि आसमान व ज़मीन के दरमियान सफ़ेद फ़र्श बिछाया गया है और कुछ मर्द फ़ज़ा में अपने हाथों में चाँदी के बर्तन लिये हुये खड़े हैं और मैने देखा कि परिन्दों की एक टुकड़ी मेरे रूबरू आई फिर उन्होंने मेरी गोद को ढँाप लिया उन परिन्दों की चौंच ज़ुमुर्रुद की और बाज़ू याकूत के थे

नीज़ फ़रमाया हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की विलादत के बाद मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) सज्दे की हालत में हैं और उँगलियों को इस तरह उठाये हुये हैं जैसे कोई गिरया व ज़ारी करने वाला उठाता है फिर मैंने एक मुनादी की आवाज़ सुनी जो कह रहा था हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को ज़मीन के मशारिक़ व मग़रिब में ले जाओ और समुन्दरों की सैर कराओ ताकि वो सब आपके नाम नामी, व औसाफ़े गिरामी, और सूरते गिरामी को पहचान लें और जान लें।
(ख़साइसुल कुबरा–1/114)

सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत के बाद मैंने एक मुनादी को निदा करते हुये सुना कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को शर्क़ ता ग़र्ब और अम्बिया–ए–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के मोलिदात पर ले जाओ

और आपको हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की सफ़ा (पाकीज़गी) और हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की रिक़्क़त (नरमी) और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की खुल्लत (दोस्ती, मुहब्बत) और हज़रत इस्माईल (अ़लैहिस्सलाम) की ज़बान व हज़रत याकूब (अ़लैहिस्सलाम) की मर्सरत (शादमानी) व हज़रत युसूफ (अ़लैहिस्सलाम) का जमाल दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) की आवाज़ हज़रत अइयूब (अ़लैहिस्सलाम) का सब्र हज़रत याह्या (अ़लैहिस्सलाम) का जुहदो तक़वा (परहेज़गारी) और हज़रत ईसा बिन मरयम (अ़लैहिस्सलाम) का करम अ़ता कर दो

और तमाम नबियों के अख़लाक़ हमीदा और फ़ज़ाइले जलीला से आरास्ता कर दो सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैंने देखा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) सब्ज़ रेशमी कपड़े को थामे हुये लेटे थे फिर किसी को कहते सुना खुशी है खुशी है मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने तमाम दुनियाँ को थामे रखा है।

और कोई मख़्लूक़ नहीं जो आपके हल्क़ा –ए –नबूवत से बाहर हो और मैंने देखा तीन अफ़राद हैं एक के हाथ में चाँदी का लोटा दूसरे के हाथ में सब्ज़ ज़ुमुररुद का तश्त और तीसरे के हाथ में सफ़ेद रेशमी कपड़ा था उसने कपड़े का सर खोला और एक अँगूठी निकाली जिसकी चमक से आँखें चका चौंध होती थीं फिर उस लोटे से आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को सात मर्तबा गुस्ल दिया और दोनों शानों के दरमियान उस अँगूठी से मुहर लगाई।
(ख़साइसुल कुबरा–1/115)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत कि जब नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) पैदा हुये तो उनका चेहरा इस क़दर नूरानी था कि गोया वो एक आफ़ताब हैं सइयदा आमना (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत हुई तो मैंने एक झण्ड़ा देखा जो याकूत की लकड़ी पर था

जिसे ज़मीन व आसमान के दरमियान नसब कर दिया गया और मैंने उसके सिरे पर एक ऐसा नूर देखा जो आसमान तक पहुँच रहा था और मैंने शाम के महल्लात देखे और मैंने अपने क़रीब एक साहिली परिन्दों का एक गिरोह देखा जो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को सज्दा कर रहा था और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) पर अपने बाजुओं को फैला रहा था।
(ख़साइसुल कुबरा–1/115)

विलादते मुस्तफ़ा के पुर मुबारक मौक़े पर दो आ़लम में खुशियाँ मनाई गई और उस दिन बातिल पर हक़ का इन्क़लाब आया और जिन्नों इंसां हजरो शजर हत्ता कि क़ायनात की हर शैः ने विलादते मुस्तफ़ा की खुशी मनाई और दुनियाँ पर अल्लाह तआ़ला की ख़ास रहमतों और बरकतों का नुजूल विलादते मुस्तफ़ा के सबब से हुआ जाहलियत और बातिल की तारीकियाँ मिट गई और हिदायत का नूर जलवा अफरोज़ हुआ।

इसलिये हम तमाम गुलामाने और मुहिब्बाने रसूल मीलादुन्नबी पर खुशियाँ मनाते और जश्ने विलादते मुस्तफ़ा पर चिरागां व रोशनी का एहतिमाम करते और मजलिसे मीलाद का इन्इक़ाद करते हैं तो लोग इस पर ऐतराज़ करते हैं और कहते हैं कि इस्लाम में तो दो ईदें थीं ये तीसरी ईद कहाँ से आई हांलाकि उनकी ये बद अक़ीदगी और और बे इल्मी की दलील है क्योंकि दीन इस्लाम में दो ईदें नहीं बल्कि सेंकडों ईदें हैं जैसे हर जुमा मुसलमानों की ईद है जैसा कि हदीस पाक में है–

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि– अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जुमआ़ ईद का दिन है जो अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को अ़ता फ़रमाया है जो जुमआ़ के लिए आये तो गुस्ल करे और खुशबू मयस्सर हो तो उसे भी लगा ले और तुम पर मिस्वाक भी लाज़िम है। (इब्ने माजा–1/375–1098)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- बेशक जुमआ़ का दिन ईद का दिन है तुम अपने ईद के दिन को रोज़े का दिन न बनाओ मगर ये कि तुम इससे क़ब्ल (जुमअ़रात) या उसके बाद के दिन का रोज़ा रखो। (फिर इस दिन रोज़ा रखने की इजाज़त है वरना नहीं)
(मुस्नद अहमद-4/240-8012)
(हाकिम अल मुस्तदरक-2/113-1595)

मज़कूरा अहादीस मुबारका से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उम्मते मुस्लिमा के लिये योमे जुमआ़ को ईद क़रार दिया तो जो ईदों की भी ईद है यानी ईद मीलादुन्नबी तो हम इस ईद पर खुशियाँ क्यों न मनायें जिनके सदक़े व तुफ़ैल हमें सेंकड़ों ईदें मिलीं अगर विलादते मुस्तफ़ा न होती तो न ईद होती न जुमआ़ होता न इस्लाम होता न क़ुरान होता हत्ता कि कायनात का वुजूद हुज़ूर सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से है।

इस्लाम कायनात का मज़हब है और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) दो आ़लम के लिये रहमत बनाकर मबऊ़स किये गये अगर विलादते मुस्तफ़ा न होती तो न हमें इस्लाम मिलता न कुरान मिलता न शरीअ़त मिलती न तरीक़त मिलती न राहे हिदायत मिलती हत्ता कि हम इन्सान तो होते लेकिन हमारे पास इन्सानियत भी न होती विलादते मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) तमाम इन्सानों के लिये नेअ़मते उ़ज़्मा हैं अल्लाह तआ़ाला ने हमें बेशुमार नेअ़मतें अ़ता कीं मगर नेअ़मते मुस्तफ़ा हर नेअ़मत पर मुक़द्दम और आ़ला है।

-:ईद मीलादुन्नबी मनाना सुन्नते इलाही है:-

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कुरान मजीद में विलादते अम्बिया (अ़लैहिमुस्सलाम) और अपने महबूब बन्दो का तज़किरा मुफ़स्सल व सरीह अल्फ़ाजों में बयान फ़रमाया। हज़रत मरयम (अ़लैहिस्सलाम) पैग़म्बर नहीं हैं फ़क़्त अल्लाह तआ़ाला की महबूब बन्दी हैं अल्लाह तआ़ाला ने कुरान मजीद में इनका मीलाद नामा बयान फ़रमाया-

और (याद करें) जब इमरान की बीबी ने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब जो मेरे पेट में है उसे (दीगर ज़िम्मेदारियों से) आज़ाद करके ख़ालिस तेरी नज़र करती हूँ सो तू मेरी तरफ़ से (ये नज़राना) कुबूल फ़रमां बेशक तू खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है फिर जब उसने लड़की जनी तो अ़र्ज़ करने लगी मौला मैंने तो ये लड़की जनी है हालाँकि कि जो कुछ उसने जना था अल्लाह उसे खूब जानता था (फिर वो बोली) और लड़का (जो मैंने माँगा था) इस लड़की जैसा हरगिज़ नहीं (हो सकता) था (जो अल्लाह ने अ़ता की है) और मैंने उसका नाम ही मरयम (इबादत गुज़ार) रख दिया और बेशक मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मरदूद (के शर) से तेरी पनाह में देती हूँ (सू०–आले इमरान–35,36)

बाज़ लोग कहते हैं कि हुजूर का मीलाद मनाना फ़ेअ़ले बिदअ़त है तो उन्हें इस मज़कूरा आयात से सबक हासिल करना चाहिये कि अल्लाह तआ़ाला क़ुरान मजीद में मरयम अ़लैहिस्सलाम की मीलाद

का बयान फ़रमां रहा है तो रहमतुल लिल आ़लमीन का मीलाद मनाना कैसे बिदअ़त हो सकता है बल्कि हक़ीक़त ये है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) का जश्ने मीलाद मनाना असल ईमान है और सहीउल अ़क़ीदा सुन्नी होने की अ़लामत है और ये अम्र दिलों का तक़वा और दोनों जहान में सआ़दत व ख़ैर और सवाबे दारैन है और हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत की दलील और निशानी है।

अल्लाह तआ़ाला ने ईसा अ़लैहिस्सलाम की विलादत का ज़िक्र कुरान मजीद में बयान फ़रमाया–

और (ऐ महबूब) आप किताब (कुरान मजीद) में मरयम का ज़िक्र कीजिये जब वो अपने घर वालो से अलग होकर इ़बादत के लिये ख़ल्वत इख़्तियार (करते हुये) मशरिक़ी मकान में आ गईं पस उन्होंने उन (घर वालों और लोगों) की तरफ़ से हिज़ाब इख़्तियार कर लिया तो–

हमने उनकी तरफ़ अपनी रूह (यानी जिबरईल अ़लैहिस्सलाम) को भेजा सो जिबरईल उनके सामने बशरी सूरत में ज़ाहिर हुये मरयम ने कहा बेशक मैं तुझसे खुदा–ए–रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तू (अल्लाह से) डरने वाला है (जिबरईल ने) कहा कि मै तो फ़क़त तेरे रब का भेजा हुआ हूँ (और इसलिए आया हूँ) कि मैं तुझे एक पाकीज़ा बेटा अ़ता करूँ (मरयम ने) कहा मेरे हाँ लड़का कैसे हो सकता है जबकि मुझे किसी इन्सान ने छुआ तक नहीं और न ही मैं बदकार हूँ जिबरईल ने कहा (तअ़ाज्जुब न कर) ऐसे ही होगा तेरे रब ने फ़रमाया है ये (काम) मुझ पर आसान है और ये इसलिए होगा ताकि हम उसे लोगों के लिये निशानी और अपनी जानिब से रहमत बना दें और ये अम्र (पहले से) तय शुदा है पस मरयम ने उसे पेट में ले लिया और आबादी से अलग होकर एक दूर मक़ाम पर जा बैठी फिर दर्दे ज़ह उन्हें एक खजूर के तने तक ले आया वो (परेशानी के अ़ालम में) कहने

लगी ऐ काश मैं पहले से मर गई होती और बिल्कुल भूली बिसरी हो चुकी होती फिर उनकी नीचे की जानिब से (किसी ने) उन्हें आवाज़ दी कि तू रंजीदा न हो बेशक तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया और खजूर के तना को अपनी तरफ़ हिलाओ वो तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरा देगा सो तुम खाओ और पियो और (अपने हसीन व जमील फरज़न्द को देखकर) अपनी आँखें ठन्डी करो।

फिर अगर तुम किसी भी इन्सान को देखो तो (इशारे से) कह देना कि मैंने (खुदाये) रहमान के लिये (खामोशी के) रोज़े की नज़र मानी हुई है सो मैं आज किसी इन्सान से क़तअ़न गुफ्तगू नहीं करूँगी फिर वो उस बच्चे को (गोद में) उठाये हुयें अपनी क़ौम के पास आ गई वो कहने लगे ऐ मरयम यक़ीनन तू बहुत ही अ़जीब चीज़ लाई है ऐ हारून की बहन न तेरा बाप बुरा आदमी था और न तेरी माँ बद चलन थी

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया वो कहने लगे हम इससे किस तरह बात करें जो (अभी) गहवारे में बच्चा है (बच्चा खुद) बोल पड़ा बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उसने मुझे किताब अ़ता फ़रमाई है और मुझे नबी बनाया है और मैं जहाँ कहीं भी रहूँ उसने मुझे सरापा बरकत बनाया है और जब तक भी ज़िन्दा हूँ उसने मुझे ज़कात और नमाज़ का हुक्म फ़रमाया है और अपनी वालिदा के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया है और उसने मुझे सरकश व बदबख़्त नहीं बनाया

और मुझ पर सलाम हो मेरे मीलाद के दिन और मेरी वफ़ात के दिन और जिस दिन मैं ज़िन्दा उठाया जाऊँगा ये मरयम के बेटे ईसा हैं (यही) सच्ची बात है जिसमें ये लोग शक करते हैं ये अल्लाह की शान नहीं कि वो (किसी को अपना) बेटा बनाये वो (इससे) पाक है जब वो किसी काम का इरादा फ़रमाता है तो सिर्फ़ यही हुक्म देता है कि हो जा पस वो हो जाता है (मरयम–16 ता 35)

यह्या (अ़लैहिस्सलाम) के मीलाद का ज़िक्र कुरान मजीद में मज़कूर है–

और सलाम हो याह्या पर उनके मीलाद के दिन। (सू०–मरयम–33)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की विलादत का ज़िक्र कुरान मजीद में मुफ़स्सल बयान फ़रमाया–

और जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं एक बशरी पैकर बनाने वाला हूँ फिर जब मैं उसकी ज़ाहिरी तशकील को मुक़म्मल तौर पर दुरस्त हालत में ला चुकूँ और उस पैकरे (बशरी के बातिन) में अपनी (नूरानी) रूह फूँक दूँ तो तुम उसके लिये सज्दे में गिर पड़ना पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के उसने सज्दा करने वालों के साथ होने से इन्कार कर दिया।
(सू०–हिज्र–28 ता 31)

अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अ़लैहिस्सलाम)

की विलादत का तज़किरा कुरान मजीद तफ़्सील से बयान फ़रमाया–

और हमने मूसा की वालिदा के दिल में ये बात डाल दी कि तुम उन्हें दूध पिलाती रहो फिर जब तुम्हें उन पर क़त्ल किये जाने का अंदेशा हो जाये तो उन्हें दरिया में डाल देना और ना तुम (इस सूरते हाल से) ख़ौफ़ ज़दा होना और न रंजीदा होना बेशक हम उन्हें तुम्हारी तरफ़ वापस लौटाने वाले हैं

और उन्हें रसूलों में (शामिल) करने वाले हैं फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उन्हें (दरिया से) उठा लिया ताकि वो (मशइयते इलाही से) उनके लिये दुश्मन और (बाइसे) ग़म साबित हो बेशक फ़िरऔन और हामान और दोनों की फौजें सब ख़ताकार थे और फ़िरऔन की बीवी ने (मूसा को देखकर) कहा कि (ये बच्चा) मेरी और तेरी आँख के लिये ठंड़क है इसे क़त्ल न करो शायद ये हमें फ़ायदा पहुँचाये या हम इसको बेटा मान लें और वो (इस तजवीज़ के अंजाम

से) बे ख़बर थे और मूसा की वालिदा का दिल (सब्र से) खाली हो गया क़रीब था कि वो (अपनी बे क़रारी के बाइस) इस राज़ को ज़ाहिर कर देती अगर हम उनके दिल पर सब्र व सुकून की कुव्वत न उतारते ताकि वो (वायदा इलाही पर) यक़ीन रखने वालों में से रहें और (मूसा की वालिदा ने) उन की बहन से कहा कि (उनका हाल मालूम करने के लिये) उनके पीछे जाओ सो उन्हें दूर से देखती रहीं और वो लोग (बिल्कुल) बे ख़बर थे और हमने पहले ही से मूसा पर दाइयों का दूध ह़राम कर दिया था सो (मूसा की बहन ने) कहा क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों की निशान देही करूँ जो तुम्हारे लिये इस (बच्चे) की परवरिश कर दें और वो इसके ख़ैर ख़्वाह (भी) हों पस हमने मूसा को (यूँ) उनकी वालिदा के पास लौटा दिया ताकि उनकी आँख ठन्ड़ी रहे और रंजीदा न हो और ताकि वो (यक़ीन से) जान लें कि अल्लाह का वायदा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(सू०–अल क़सस–7 ता 13)

बाज़ बद अक़ीदा लोग एतराज़ करते हैं कि मीलादे मुस्तफ़ा का ज़िक्र नहीं करना चाहिये बल्कि उनकी सीरत पाक का ज़िक्र करना चाहिये तो इसका जवाब ये है कि अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में अपने अम्बिया (अ़लैहिमुस्सलाम) का ज़िक्र फ़रमाता है तो इस एतवार से नबी व रसूल की मीलाद का ज़िक्र करना सुन्नते इलाही है।

सब तारीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जिसने मुझे बुढ़ापे में ईस्माईल और इस्हाक अ़ता फ़रमाये बेशक मेरा रब खूब दुआ़ सुनने वाला है। (सू०-इब्राहीम-39)

मज़कूरा आयाते करीमा ने उन तमाम एतराज़ात की नफ़ी कर दी जो ईद मीलादुन्नबी पर बिदअ़त का फ़तवा देते हैं और नाजाइज़ कहते हैं जबकि हकीक़त ये है कि ईद मीलादुन्नबी मनाना सुन्नते इलाही और बाइसे अज्रो अ़ज़ीम है मज़कूरा दलाइल से ईद मीलादुन्नबी पर लगने वाले तमाम एतराज़ात का रद्द हो जाता है।

क्योंकि किसी अम्र को नाजायज़ व बिदअ़त साबित करने के लिये कुरान व हदीस के दलाइल की दरकार होती है और जो लोग अहादीस से इस्तिदलाल करते और ईद मीलादुन्नबी को नाजायज़ या बिदअ़त कहते हैं तो वो उन अहादीस से मुराद बिदअ़ते सइया लेते हैं जबकि ईद मीलादुन्नबी बिदअ़ते हसना है बिदअ़त की तारीफ़ हमने आगे सफ़हात पर बयान की है

ईद मीलादुन्नबी पर कुरआ़नी व हदीसी दीगर इ़ल्मी दलाइल

अगर कोई शख़्स ये दलील पेश करे क्या सहाबा ने मीलाद मनाया तो ये मीलादे मुस्तफ़ा के नाजायज़ होने की दलील नहीं बन सकती क्योंकि दीन इस्लाम में बहुत से काम नये हुये हैं जो सहाबा से साबित नहीं तो इस एतबार से दीन में हर नया काम बिदअ़त (सइया) हो जायेगा फिर अगर कोई ये कहे कि मीलाद मनाना बिदअ़त व नाजायज़ है तो मै उनसे पूँछना चाहता हूँ कि कुरान व अहादीस में में कहाँ लिखा है कि मीलाद मनाना नाजाइज़ व बिदअ़त है

और जिस अम्र या फेअ़ल की कुरान व अहादीस में मुमानियत नहीं है तो कुरान व अहादीस में किसी अम्र या फेअ़ल का ममनूअ़ न होना ही उस अम्र (काम) के जाइज़ होने की सबसे बड़ी दलील है यहाँ एक बात तव्वजो तलब है वो ये है कि हर वो चीज़ जिसकी कुरान व हदीस में मुमानियत नहीं तो वो हर चीज़ जाइज़ है चाहे वो कोई भी चीज़ हो या कोई भी अम्र हो वो जाइज़ है।

जैसा कि हदीस पाक में है–
नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने हराम क़रार दिया वो हराम है और जिसको हलाल क़रार दिया वो हलाल है और जिस चीज़ के बारे मे ख़ामोश रहा वो माफ़ है।
(तिर्मिज़ी–1/942–1726)
(इब्ने माजा–3/95–3367)
(हाकिम–4/129–7115)
(मुअ़जम कबीर–6/250–6124)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–10/12–19699)
(देलमी–अल फिरदौस–2/158–2800)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया-अल्लाह तआ़ला ने बाज़ चीज़े फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उन्हें ज़ाया मत करो और जो हराम कर दिया उनकी हुरमत मत तोड़ो और जो हुदूद मुक़र्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढो और बाज़ चीज़ों में उसने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये ख़ामोशी) किसी भूल की वजह से नहीं बल्कि रहमत व करम की वजह से है तो उनमे बहस न करो।
(मुअ़जम कबीर-22/222-589)
(मिश्कात-325)

मज़कूरा अहादीस मुबारका से ये बात वाज़ेह और साबित हुई कि दीन इस्लाम में हर वो चीज़ व अम्र जाइज़ व मुबाह है जिसकी मुमानिअ़त क़ुरान व अहादीस में न हो और बाज़ चीज़ें और अम्र ऐसे भी हैं जो जाइज़ होने के साथ-साथ अज्रो सवाब और बाइसे ख़ैर भी हैं जैसे ईद मीलादुन्नबी मनाना, ताज़ियादारी करना, बुज़ुर्गाने दीन व नेक सालिहीन और अल्लाह तआ़ला के महबूब व मक़बूल बन्दों

की यादगार मनाना और उर्स करना, व औलिया–ए–किराम के मज़ारात की हाज़िरी व ज़ियारत करना और मदरसों को क़ायम करना व दीनी मदारिस में क़ुरान व सुन्नत और अ़रबी क़ुतुब जैसे सर्फ़ व नहव की तालीम देना, वाअ़ज़ व नसीहत़ और दीनी तबलीग़ व लोगों की इस्लाह और अवाम को राहे हिदायत व नेक आअ़माल की तरफ़ राग़िब करने के लिये जलसे व मजालिस मुनक़्क़िद करना व किताबों की तालीफ़ व तसनीफ़ करना वग़ैराह शामिल हैं

और ये मज़कूरा अम्र बिदअ़त तो हैं लेकिन बिदअ़ते हसना हैं जिनका करने वाला अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ हो जाता है

इरशादे बारी तआला है–
ईसा बिन मरयम ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब हम पर आसमान से ख़्वान नाज़िल फ़रमां दे कि (उसके उतरने का दिन) हमारे लिये ईद हो जाये हमारे अगलों के लिये (भी) और हमारे पिछलों के लिये (भी) और (वो ख़्वान) तेरी तरफ़ से

निशानी हो और हमें रिज़्क़ अ़ता फ़रमां और तू सबसे बेहतर रिज़्क अ़ता करने वाला है। (सू०-मायदा-114)

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का ये दुअ़ा करना कि मेरी उम्मत पर नेअ़मते ख़्वान (यानी खाने पीने की चन्द आसमानी चीज़ें) उतार और उस दिन मेरी उम्मत के लिये यौमे ईद बना दे तो आसमानी नेअ़मत (ख़्वान) के उतरने का दिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत के लिये यौमे ईद बना दिया गया तो सरवरे कायनात सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की तशरीफ़ आवरी का दिन ईदों की ईद है क्योंकि आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के तुफ़ैल कायनात वजूद में आई और जिनके सदक़े व तुफ़ैल बे शुमार नेअ़मतों का नुजूल हुआ जिनके तुफ़ैल नबियों को नुबूवत मिली जिनके लिये जन्नत की तख़लीक़ की गयी तो जो सइयदुल अम्बिया हैं उनकी विलादत बा सअ़ादत का दिन सबसे बडी ईद है और ईद मीलादुन्नबी तमाम ईदों पर अज़मत व क़दरो मन्ज़िलत में सबसे बडी ईद है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई कि ऐ ईसा ह़जरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) पर ईमान ले आओ और अपनी उम्मत को हुक्म दो कि जो भी उनका ज़माना पाये तो ज़रूर उन पर ईमान लाये (जान लो) अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) न होते तो मैं हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को भी पैदा न करता और अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) न होते तो मैं न जन्नत पैदा करता और न दोज़ख़ पैदा करता जब मैने पानी पर अ़र्श बनाया तो उसमें लरजिश पैदा हुई लिहाज़ा मैनें उस पर ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिख दिया तो वो ठहर गया।
(हाकिम अल मुस्तरदक–2/722-4286)
(इमाम हाकिम फ़रमाते हैं कि इस हदीस की सनद सहीह है)

-: हुज़ूर ने अपना मीलाद मनाया :-

हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) तक ये ख़बर पहुँची कि बाज़ लोग आपके नसबे पाक के मुतअ़ल्लिक़ ताअ़न करते हैं तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) मिम्बर पर जलबा अफ़रोज़ हुये और फ़रमाया मैं कौन हूँ सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया कि आप अल्लाह के रसूल हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैं मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब हूँ अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो उस मख़्लूक़ में से बेहतरीन मख़्लूक़ (इन्सान) के अन्दर मुझको पैदा किया फिर उसके दो हिस्से किये एक अ़रब और एक अ़जम और उन दोनों हिस्सों में से बेहतरीन हिस्से (अ़रब) में मुझको पैदा किया फिर अल्लाह तआ़ला ने उस बेहतरीन हिस्से (अ़रब) के क़बाइल बनाये और क़बाइल में से बेहतरीन क़बीला

(कुरैश) के अन्दर मुझे पैदा किया फिर उस क़बीले के चन्द ख़ानदान बनाये और हमको उनमें से बेहतर ख़ानदान यानी बनी हाशिम में मुझको पैदा किया पस मैं तमाम लोगो से बेहतर हूँ और ख़ानदान के एतवार से भी बेहतर हूँ।
(तिर्मिज़ी–2/974–3532)
(मिश्कात–3/123–5509)

नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कि अल्लाह तआ़ाला के हाँ मैं उस वक़्त ख़ातिमुन्नबीईन लिखा हुआ हूँ जबकि आदम (अ़लैहिससलाम) अपनी गुंदी हुई मिट्टी में पड़े थे (यानी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का पुतला भी तैयार नहीं हुआ था) और मैं तुमको बताऊँ मेरा पहला (यानी मेरी नबूवत का इज़हार) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ थी जो क़ुरान मजीद में मज़कूर है "ऐ हमारे रब उनमें उन्हीं में से रसूल भेज जो उनके पास तेरी आयतें पढ़े उन्हें किताब व हिकमत सिखाये और उन्हें पाक करे यक़ीनन तू ग़लबे वाला और हिकमत वाला है"। (सू०–बक़राह–129)

फिर ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की बशारत हूँ (जो कुरान मजीद में मज़कूर है) "और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम बनी इसराईल में तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ मुझसे पहले की किताब तौरात की मैं तसदीक़ करने वाला हूँ और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला हूँ फिर जब वो उनके पास खुली दलील लाये तो कहने लगे ये तो खुला जादू है"। (सू०-सफ़-6)

और अपनी वालिदा मोहतरमा का दीदार हूँ जो उन्होंने मेरी विलादत के वक़्त देखा और मेरी वालिदा मोहतरमा के सामने एक नूर ज़ाहिर हुआ (यानी हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पैदाइश के वक़्त) जिससे शाम के महल उनको नज़र आये।
(मिश्कात-3/123-5511)
(हाकिम-3/759-4175)
(बैहक़ी शुअ़बुल ईमान-2/147-1385)
(ख़साइसुल कुबरा-1/110)

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने अपना नसब नामा व अपनी नात शरीफ़ और अपनी विलादते पाक का वाक़्या खुद बयान फ़रमाया जिससे साबित हुआ कि हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत (मीलाद) का तज़किरा करना सुन्नते रसूल है और बाइसे अज्रे अ़ज़ीम है

कसीर ताअ़दाद में हमारे अक़ाबरीन, और आइम्मा, मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन और औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम और बेशुमार उ़ल्मा हज़रात ने बड़े ज़ॉक़ व इहतिमाम और खुलूस व मसर्रत से जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाया और मीलादे मुस्तफ़ा की महफ़िलों को मुनक़्क़िद किया गया जिसमें ज़िक्रे मुस्तफ़ा और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत बा सआ़दत के वाक़्यात का तफ़्सीली बयान किया जाता रहा है और उनके मनाक़िब व अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत का बयान किया जाता रहा है जिनका हवाला आज भी इनकी तसनीफ़ात में मौजूद है और इन मशाइख़ ने ईद मीलादुन्नबी को बड़े ज़ॉक़ व इहतिमाम व

मसर्रत से मनाने की इस उम्मत को तर्ग़ीब दी है और इस अ़मल को ख़ैरो बरकत और अज्रे अ़ज़ीम क़रार दिया है जिनमें चन्द नाम दरजे ज़ैल हैं–इमाम इब्ने कसीर, इमाम जलालुद्दीन सयूती, इमाम इब्ने जोज़ी, इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी, इमाम कुस्तलानी, अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी, मुल्ला अ़ली क़ारी,(रह०) व मुजद्दिद शेखुल इस्लाम डा० मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी ने इस मौजूअ़ पर एक किताब तसनीफ़ की है

कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है–
ज़ालिका व मईं युअ़ज़्ज़िम शअ़ाइरल्लाहि फ़इन्नहा मिन तक़वल कुलूब० (सू–हज–32)

(तर्जुमा–जो लोग अल्लाह तअ़ाला की निशानियों का इहतिमाम करते हैं तो ये फ़ेअ़ल उनकें दिलो का तक़वा है)

हर वो चीज़ जिसकी निसबत अल्लाह के महबूब व मुक़र्रब और मक़बूल बन्दों से हो वो क़ाबिले ताज़ीम और अल्लाह तअ़ाला की निशानी बन जाती है।

मज़्कूरा कुरान मजीद की आयत का मफ़हूम ये है कि अल्लाह तआ़ला की वो निशानियाँ जिनकी निसबत अल्लाह के महबूब व मक़्बूल बन्दों से हो वो क़ाबिले ताअ़ज़ीम होती हैं और उन निशानियों की ताअ़ज़ीम करने वालों और यादगाार मनाने वालों के लिये ये अ़मल उनके दिलों का तक़्वा है और अल्लाह तआ़ला ने हमें हुक्म दिया है कि मेरे महबूब बन्दों की यादगार का इहतिमाम करो क्योंकि वो सब मेरी निशानियाँ हैं और अल्लाह तआ़ला की निशानियों की यादगार मनाना दिलों का तक़्वा है यानी अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दों और अल्लाह की निशानियों की यादगार मनाना बाइसे अज्रो सवाब है और हर वो चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी और यादगार में दाख़िल है जिसे देखकर अल्लाह और अल्लाह वाले याद आ जायें।

मजकूरा आयते करीमा में शआ़इर जमा है शई़रा की यानी हर वो चीज़ जिसमें अल्लाह तआ़ला का कोई अम्र या निशानी हो जिससे वो जाना पहचाना जाये और-

शआ़इरूल्लाह से दीन की निशानियाँ मुराद हैं ख़्वाह वो मकानात हो जैसे–काबातुल्लाह, अरफ़ात, मुजदल्फा, तीनो जमरात (जिस पर रमी की जाती है) और सफ़ा मरवाह, मिना और मस्जिद या वो शआ़इरे ज़माने हों जैसे रमज़ान, हुरमत वाले महीने, ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़हा, यौमे जुमआ़, अज़ान, अक़ामत, नमाज़े बा जमाअ़त, नमाज़े ईदैन, नमाज़े जुमआ़, ख़त्ना ये सब शआ़इरे दीन हैं या शआ़इरे दीन की दूसरी अ़लामतें हों।
(तफ़्सीर कुरतबी–6/382)
(तफ़्सीर बगवी–1/91)
(सिरातुल जिनान–1/256)

मालूम हुआ जिस चीज़ से अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब व मक़बूल बन्दों की निसबत वाबस्ता हो जाये तो वो चीज़ अ़ज़मत वाली बन जाती है और मुअ़ज़्ज़म चीज़ों की ताअ़ज़ीम व तौक़ीर दीन में दाखिल है।

मनसिके हज के तमाम अरकान सब अल्लाह तआ़ला की निशनियाँ हैं और

अल्लाह के महबूब बन्दों और नबियों की यादगार है और अल्लाह तआ़ला ने अपने मेहबूब व मक़बूल बन्दों और बरगज़ीदा रसूल की यादगार को अपनी इ़बादत में यानी मनसिके हज में शामिल करते हुये क़यामत तक के लिये जारी व सारी कर दिया और उन तमाम अफ़आ़ल को उम्मते मुस्लिमा पर लाज़िम कर दिया जो उसके महबूब बन्दों से निसबत रखते हैं और जुमला मनासिके हज अल्लाह के महबूब व मक़बूल बन्दों की यादगार है।

हज का लिबास यानी इहराम हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यादगार है

तमाम हाजी जिलहिज्जा की आठ तारीख़ को दो सफ़ेद चादरें ज़ैबे तन करते हैं जिसे इहराम कहते हैं जैसा कि हज़ारों साल पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम व इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ने दो चादरें काबे की तामीर के वक़्त ज़ैबे तन की थीं और उसी तरह नंगे सिर काबातुल्लाह में दाख़िल होते हैं जिस तरह इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

व इस्माईल अ़लैहिस्सलाम नंगे सिर दाख़िल हुये और यहाँ पर सर के बालों व नाखूनों का बढ़ाना भी सुन्नते इब्राहीम है।

हज की तलबिया हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पुकार का जवाब है

तमाम हाजी इहराम पहनने के बाद तलबिया कहना शुरू कर देते है यानी-लब्बैक अल्ला-हुम्मा लब्बैक लब्बैक ला शरीका लका लब्बैक इन्नल हम्दा वल नेअ़मता लका वल मुल्क ला शरीका लाका (मैं हाज़िर हूँ या अल्लाह मैं हाज़िर हूँ मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं मै हाज़िर हूँ बेशक तमाम तारीफ़ें और नेअ़मते तेरे लिये हैं और मुल्क भी तेरा कोई शरीक नहीं) तलबिया के अल्फाज़ दरअस्ल हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की उस पुकार का जवाब है जो उन्होंने तामीरे काबा की तकमील पर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया था कि लोगों को मेरे घर की तरफ़ बुलाओ की तामील में दी थी।

इरशादे बारी तआ़ाला है-
और तुम लोगों में हज का बुलन्द आवाज़ से ऐलान करो लोग तुम्हारे पास पैदल और दुबले पतले जानवरों पर दूर दराज़ से चले आयेंगे। (सू०-हज-22)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने काअ़बे की तामीर के हुक्मे ख़ुदावन्दी के मुताबिक़ एक पहाड़ पर चढ़कर बैतुल्लाह में हाज़िर होने के लिए आवाज़ लगाई कि आओ अल्लाह के घर के तरफ़ आओ हज के लिये उनकी ये निदा ज़मीनों आसमान तक बुलन्द हुई और तमाम मख़लूक़ ने सुनी हत्ता कि अ़ालमे अरवाह में उसे सुनाया गया और उस निदा के जवाब में जिस जिस के मुक़द्दर में हज की सआ़दत थी हर एक रूह ने जवाब में लब्बैक कहा और तमाम हाजियों पर तलबिया कहना क़यामत तक के लिये लाज़िम कर दिया गया और तमाम लोग जो हजे बैतुल्लाह करते हैं वो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पुकार का जवाब देते हैं।

हदीस पाक में है–
हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने काअ़बतुल्लाह की तामीर मुक़म्मल की तो अल्लाह तअ़ाला ने उनकी तरफ़ वही फ़रमाई कि लोगों में हज का बुलन्द आवाज़ का ऐलान कर दो तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सल्लाम ने निदा दी (ऐ-लोगो) ख़बरदार बेशक तुम्हारे रब का घर (काअ़बा) बनाया है और तुम्हें उसका हज करने का हुक्म दिया है लिहाज़ा आपकी पुकार पर पत्थर, दरख़्त, व मिट्टी, पहाड़, और पानी, और आसमान से लेकर ज़मीन तक तमाम मख़लूक़ ने उनकी निदा सुनी और कोई भी चीज़ ऐसी न थी जिसने ये जवाब न दिया हो कि या अल्लाह हम तेरी बारगाह में हाज़िर हैं।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–5/176–9613,9614)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/350–3998)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/664–4026)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–6/329-31818) (दुर्रे मन्सूर–6/32)

मक़ामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बनाना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यादगार है

इरशादे बारी तअ़ाला है–
उसमें रोशन निशानियाँ है उनमें एक मक़ामे इब्राहीम है। (सू०–आले इमरान–97)

इस आयत से मुराद मक़ामे इब्राहीम में आपके क़दमों के निशानात हैं।
(तफ़्सीर तबरी–4/17)

इस आयत से मुराद मकामे इब्राहीम है।
(दुर्रे मन्सूर–2/153)

बाबे कअ़बा के सामने मिम्बर और ज़मज़म के दरमियान क़दीम बाबुस्सलाम के क़रीब चार खम्भों पर एक छोटा सा गुम्बद है जिसके इर्द गिर्द पीतल का चौकोर चौखट नुमा मक़्सूराह बना हुआ है उसके अन्दर वो पत्थर नसब है जो मक़ामे इब्राहीम कहलाता है।

वो पत्थर चाँदी से मढ़ा हुआ है जिसकी बुलन्दी तीन बालिस्त और चौड़ाई दो बालिस्त है दोनो क़दम मुबारक और उँगलियों के निशानात उस पर वाज़ेह हैं

ये वो पत्थर है जिस पर खड़े होकर ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहस्सलाम ने कअ़बे की दीवार बनाई हज़ारों साल बाद भी उसके निशानात बाक़ी और मह़फ़ूज़ रहना अल्लाह तआ़ला की ये सब निशानियाँ हैं। (तफ़सीर नईमी–4/34)

जिस क़दर दीवार ऊँची होती जाती थी ये पत्थर भी ऊँचा हो जाता था और शाम को उतरते वक़्त ये नीचा हो जाता था ये पत्थर आपके क़दम मुबारक की जगह रेत या ग़ारे की तरह नरम हो गया था कि उसमें बखूबी निशाने क़दम वाक़ेअ़ हो गये जो अब तक उसमें मौजूद हैं बाक़ी आसपास का ह़िस्सा सख़्त ही रहा और तमाम हुज्जाज के सर इस पत्थर की जानिब झुकवा दिये गये जिस पत्थर को अल्लाह तआ़ला के मक़बूल व मुक़र्रब–

बन्दों के क़दम बोसी का शरफ़ ह़ासिल हो जाये उसकी शान बढ़ जाती है और वो शअ़ाइरूल्लाह यानी अल्लाह की निशानी बन जाता है।

जिस पत्थर पर खड़े होकर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने काअ़बे की तामीर की तो अल्लाह तअ़ाला ने उस पत्थर को इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यादगार बनाते हुये उस पत्थर को काअ़बे के सहन में नसब करके हुक्म दिया कि इस पत्थर के क़रीब दो रकअ़त नमाज़ अदा करो ये मेरे ख़लील इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की यादगार है जबकि अल्लाह तअ़ाला ने काअ़बे से तमाम पत्थर हटवा दिये और इस पत्थर को काअ़बे के सहन में इसलिये नसब करा दिया कि इस पत्थर की निसबत मेरे बरगज़ीदा और मक़बूल बन्दे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से है और अल्लाह तअ़ाला ने उनकी यादगार को क़ायम व दायम रखा और अपनी इ़बादत यानी मनासिके हज में क़यामत तक के लिये उस पत्थर के क़रीब नमाज़ अदा करना लाज़िम कर दिया।

सफ़ा मरवाह के दरमियान चक्कर लगाना हज़रत हाजरा की यादगार है

इरशादे बारी तआ़ला है-
बेशक सफ़ा और मरवाह अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है चुनांचा जो शख़्स बैतुल्लाह का हज या ऊ़मराह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि दोनों के दरमियान चक्कर लगाये। (सू०-बक़राह-158)

शआ़इर जमा कसरत है शई़रा की जो दस से ज़्यादा ला तादाद पर बोली जाती है कुरान ने बतलाया कि इस्लाम में बहुत सी चीज़े शआ़इरूल्लाह (अल्लाह तआ़ला की निशानियाँ) हैं सफ़ा और मरवाह की तरह जिसको मक़बूल बन्दों से निसबत हो वो शआइरूल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) हैं इसको उन दो पहाड़ो की वजह से अल्लाह तआ़ला की निशानी कहा जाता है कि रब तआ़ला ने इनको गुज़िश्ता साबरीन की यादगार और निशानी बतलाया
(तफ़्सीर नईमी-2/98)

तो मालूम हुआ जिस चीज़ को अल्लाह तअ़ाला के सालिहीन से निसबत हो जाये वो अ़ज़मत वाली बन जाती है जैसे सफ़ा मरवाह पहाड़ हज़रत हाजरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) के क़दम की बरकत से अल्लाह तअ़ाला की निशानी बन गये और ये भी मालूम हुआ मुअ़ज़्ज़म चीज़ों की तअ़ज़ीम व तौक़ीर दीन में दाख़िल है इसलिये सफ़ा मरवाह की सई दीन में शामिल हुई।

तो बेजान पत्थर अल्लाह वालों की निसबत से अल्लाह तअ़ाला की निशानी बन गये तो ईद मीलादुन्नबी मनाना हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की निसबत से अल्लाह तअ़ाला की निशानी क्यों न होगी हक़ीक़त ये है कि ईद मीलादुन्नबी मनाना अल्लाह तअ़ाला की निशानी है और हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की यादगार है जिसकी ताज़ीम व तकरीम करना हम तमाम मुसलमानों पर वाजिब और बाइसे अज्रो सवाब है।

जब हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ाला के हुक्म से अपनी ज़ोजा और अपने कमसिन बेटे को सफ़ा व मरवाह पहाड़ों के दरमियान छोड़कर चले गये फिर हज़रत ईस्माईल (अ़लैहिस्सलाम) को प्यास की हाजत हुई तो आपकी वालिदा हज़रत हाजरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने पानी की तलाश में सफ़ा मरवाह के सात चक्कर लगाये अल्लाह तआ़ाला को अपनी इस बन्दी हाजरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के सफ़ा मरवाह के दरमियान चक्कर लगाना इतना पसंद आया कि उसे हज का हिस्सा बना दिया जिसे सई के नाम से जाना जाता है और ये मनासिके हज के वाजिबात में से है यानी इसके न करने से हज नाक़िस रहता है यानी मुक़म्मल नहीं होता।

और सफ़ा मरवाह की तरह हर चीज़ जिसकी निसबत अल्लाह के महबूब व मक़बूल बन्दों से हो वो अल्लाह तआ़ाला की निशानी है और उसका इहतिमाम करना बाइसे ख़ैरो बरकत व अज्रे अ़ज़ीम है।

जब दो बेजान पत्थर निसबते हाजरा की वजह से अल्लाह तआ़ाला की निशानी और अ़ज़मत वाले बन गये तो ईद मीलादुन्नबी जिसकी निसबत रहमतुल लिल आ़लमीन से है तो वो अल्लाह तआ़ाला की निशानी और क़ाबिले अ़ज़मत क्यों न होगा

मक़ामे अरफ़ात आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम की यादगार है

हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम के जन्नत से निकलने के बाद मैदाने अरफ़ात में इन दोनों हज़रात का मिलाप हुआ और इन दोनों हज़रात ने एक दूसरे को पहचान लिया अल्लाह तआ़ाला ने अपने इन दोनों मक़बूल व मुक़र्रब बन्दों के इस मिलाप को हज का अहम हिस्सा बना दिया और तमाम हुज्जाज को इस अरफ़ात के मैदान में हाज़िरी देना फ़र्ज़ कर दिया इस अरफ़ात के मैदान में तमाम हुज्जाज हाज़िर होते और लब्बैक पुकारते है।

रमी जमरात यानी शैतान को कंकर मारना इब्राहीम व इस्माईल की यादगार है

हज़ारो साल पहले हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम ने शैतान को कंकरियाँ मारी थीं तो अल्लाह तअ़ाला को इनका कंकरियाँ मारने का फ़ेअ़ल इतना पसंद आया कि इसे हज का हिस्सा बना दिया और जब तक हुज्जाज शैतान को कंकरियाँ न मारे हज की तकमील नहीं हो सकती और शैतान को कंकरियाँ मारना हज का एक वाजिब हिस्सा है।

हालांकि अब कंकरियाँ शैतान को नहीं मारी जातीं बल्कि सुतून को मारी जाती हैं मगर असल में शैतान को कंकरियाँ मरना तसव्वुर किया जाता है यानी जो फ़ेअ़ल हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम से सादिर हुआ उसी फ़ेअ़ल की नक़ल करने का हुक्म अल्लाह तअ़ाला ने हमें दिया क्योंकि उस फ़ेअ़ल से हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम

की निसबत वाबस्ता है इसलिये उस फ़ेअ़्ल को करना हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम की यादगार मनाना है ।

कुर्बानी भी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यादगार है

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने मक़ामे मिना में अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये अपने लख़्ते जिगर हज़रत ईस्माईल अ़लैहिससलाम की कुर्बानी देने के लिये हज़रत ईस्माईल अ़लैहिससलाम की गर्दन पर छुरी चलाई मगर हुक्मे खुदावन्दी से वो छुरी चली मगर हज़रत ईस्माईल अ़लैहिससलाम ज़िब्हा नहीं हुये फिर बतौर फ़िदया अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से एक दुम्बा भेजा और फ़रमाया ऐ इब्राहीम मैंने तेरी कुर्बानी कुबूल कर ली और अपने इस बेटे के बदले इस दुम्बे की कुर्बानी दो और ये कुर्बानी का अ़मल अल्लाह तआ़ला को इतना पसंद आया कि क़यामत तक हर हाजी के लिये कुर्बानी को हज का एक

रुकन बना दिया और अस्ल में कुर्बानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिससलाम व हज़रत ईस्माईल अ़लैहिससलाम की यादगार है जिसे अल्लाह तआ़ाला ने हज का हिस्सा बना दिया।

इरशादे खुदावन्दी है–
और कुर्बानी के बड़े जानवरों को हमने तुम्हारे लिये अल्लाह तआला की निशानियों में से बना दिया इसमें तुम्हारे लिये भलाई है। (सू०–हज–36)

मज़कूरा दलाइल से ये बात वाज़ेह और साबित हुई कि हज इ़बादते ख़ुदा है मगर हज के तमाम अरकान अल्लाह तआ़ाला के बरगज़ीदा और मक़बूल बन्दों की यादगार हैं इस एतवार से अल्लाह तआ़ाला के महबूब व मक़बूल बन्दों की यादगार मनाना सुन्नते इलाही है और जिस चीज़ से अल्लाह तआ़ाला के महबूब व मक़बूल बन्दों की निसबत वाबस्ता हो वो चीज़ क़ाबिले ताज़ीम हो जाती है इसलिये ईद मीलादुन्नबी मनाना जाइज़ व सवाबे दारैन है।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत बा सआ़दत के दिन खुशियाँ मनाना बाइसे अज्रो सवाब है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की विलादत बा सआ़दत से बढ़कर कोई खुशी नहीं और विलादते मुस्तफ़ा की वो सुहानी बा-बरकत साअ़त कायनात की तमाम साअ़तों पर मुक़द्दम है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से बढ़कर कायनात में अल्लाह तआला ने कोई शैः पैदा नहीं की और अल्लाह तआ़ला को अपने महबूब सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से बढ़कर कोई शैः प्यारी और महबूब नहीं।

अल्लाह तआ़ला ने आसान व सह्ल दीन हमें अ़ता किया मगर बाज़ लोगों ने इसे दुश्वार और मुश्किल कर दिया छोटी छोटी बातों और ग़ैर ममनूअ़ चीज़ों के लिये अपनी कम अ़क़्ली और बे हिकमती और क़यासी सोच से बे बुनियादी फ़तवे जारी किये और जिसे चाहा ह़लाल कर दिया और जिसे चाहा ह़राम कर दिया।

इरशादे बारी तअ़ाला है-
अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे हक़ में आसानी व सहूलियतें चाहता है और तुम्हारे लिये दुश्वारी व तंगी नहीं चाहता।
(सू०-बक़राह-185)

कोई भी अम्र या फ़ेअ़ल हराम या नाजाइज़ नहीं होता जब तक कि कुरान व अहादीस और आसारे सहाबा से उनका हराम या नाजाइज़ होना साबित न हो जाये बाज़ चीज़े व उमूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की ह़याते तइयबा के अ़हदे मुबारक में और सहाबाकिराम के ज़माने मे न थे लेकिन बाद में वक़्त के तक़ाज़े और ज़रूरत के तहत वुजूद में आये और हर वो चीज़ जाइज़ व मुबाह है जिसकी कुरानो सुन्नत में मुमानियत न हो अगर किसी अम्र या फ़ेअ़ल का कुरान व सुन्नत के किसी भी अह़काम के साथ कोई मुख़ालिफ़त या तअ़ारुज (एक दूसरे के मुक़ाबिल होना) पाया जाये तो वो अम्र या फेअल नाजाइज क़रार पायेगा वरना नहीं।

कलामे इलाही यानी कुरान मजीद में हर शैः (चीज़) का मुफ़स्सल बयान है कायनात में कोई ज़र्रा ऐसा मौजूद नहीं जिसका तज़किरा कुरान में (सराहतन या इशारातन) मौजूद न हो और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके हलाल या हराम होने का तज़किरा कुरान में मौजूद न हो अलबत्ता कुरान की हिकमतों और फ़लसफ़ों और मफ़हूमे आयात को समझना आसान नहीं है पस अल्लाह तअ़ाला जिस क़दर जिसको अ़क़्लो फ़हम व दानाई अ़ता करे तो वो उसी के मुताबिक़ सिर्फ़ उतना ही समझ सकता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
और (ऐ मह़बूब सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) हमने आप पर वो अ़ज़ीम किताब (कुरान) नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का तफ़सीली बयान करने वाली है और (इसमें) मुसलमानों के लिये हिदायत व रहमत और वशारत है। (सू०–नहल–89)

इरशादे बारी तआ़ला है–
कुरान हर शैः का तफ़्सीली बयान करता है और हिदायत और रह़मत है उसके लिये जो ईमान ले आये। (सू०–यूसुफ़–111)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है (ऐ मह़बूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) हमने अपनी तख़लीक़ कर्दा कोई भी चीज़ ऐसी न छोड़ी जिसकी तफ़्सील (सराहतन या इशारातन) कुरान में बयान न की हो। (सू०–अनआ़म–38)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि–
इस कायनात में कोई ख़ुश्क व तर चीज़ ऐसी नहीं जिसका बयान रौशन किताब (कुरान) में मौजूद न हो।
(सू०–अनआ़म–59)

मज़कूरा बाला कुरान मजीद की आयात से साबित हुआ कि कायनात में ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका ज़िक्र कुरान में मौजूद न हो और जिस–

चीज़ का ज़िक्र कुरान में नहीं तो वो चीज़ कायनात में मौजूद ही नहीं और हर चीज़ ख़्वाह हराम हो या हलाल उसका तज़किरा कुरान में मौजूद है मगर उसे समझना मुश्किल है मगर अल्लाह जिसे तौफ़ीक़ बख़्शे।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है उसने तुम्हारे लिये उन (तमाम) चीज़ो को तफ़सीलन बयान कर दिया जो तुम पर हराम की हैं। (सू०-अनअ़ाम-119)

मज़कूरा आयते करीमा से साबित हुआ कि ई़द मीलादुन्नबी मनाना जाइज़ है क्योंकि अल्लाह तअ़ाला और उसके रसूल ने इसे हराम या नाजाइज़ नहीं फ़रमाया बल्कि ई़द मीलादुन्नबी की निसबत नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) से होने के बाइस क़ाबिले ताअ़ज़ीम और बाइसे अज्रे अ़ज़ीम है।

बाज़ लोग ई़द मीलादुन्नबी पर एतराज़ करते हैं और इसे बिदअ़त (सइया) कहते

हैं और अहादीस से इस्तिदलाल करते हैं हालांकि उनका ये कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियादी और ला इ़ल्मी और कम अ़क़्ली पर मबनी है जिसकी कोई शरई़ दलील उनके पास मौजूद नहीं बल्कि उनका ये कहना उनकी बदअ़क़ीदगी और बेइ़ल्मी को ज़ाहिर करता है बिदअ़त के इस उनवान पर हम रोशनी डालते हुये चन्द इ़ल्मी बातें तहरीर कर रहे हैं जिससे वाज़ेह हो जायेगा कि ई़द मीलादुन्नबी मनाना जाइज़ व सवाबे दारैन है।

–: बिदअ़त की ताअ़रीफ़ :–

बिदअ़त का माअ़ना है नई चीज़ ई़ज़ाद करना करना यानी ऐसी चीज़ का ई़ज़ाद करना जिसका पहले कोई वुजूद या मिस्ल न हो अल्लाह तआ़ला ने हर शैः की तख़लीक़ की जो पहले से वुजूद में न थी और न ही उसकी मिस्ल कोई चीज़ थी तो इस एतवार से कायनात की हर शैः बिदअ़त हुई जब अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम की तख़लीक़ की तो वो भी

बिदअ़त है क्योंकि आदम (अ़लैहिस्सलाम) से क़ब्ल इन्सानी वुजूद नहीं था और न ही उसका मिस्ल था तो इस एतवार से तख़लीक़े इन्सानी भी बिदअ़त है।

इरशादे बारी तअ़ाला है–
(वो अल्लाह) आसमानों और ज़मीनों को पैदा करने वाला है (जिसने कुछ नहीं से सब कुछ बना दिया) और जब वो किसी काम इरादा फ़रमाता है तो उसको यही फ़रमाता है कि हो जा पस वो हो जाता है (सू०–बक़राह–117)

अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
वही आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है। (सू०–अनअ़ाम–101)

तो मालूम हुआ कायनात की हर शैः बिदअ़त है अल्लाह तअ़ाला जो किसी ऐसी चीज़ को वुजूद में लाये जो पहले से मौजूद न हो तो उस चीज़ को बदीअ़ कहते हैं और उस चीज़ के बनाने वाले को मूजिद कहते हैं।

बद मज़हब और बद अ़क़ीदा और कम अ़क़्ल लोगों के हदीसी दलाइल जिसकी बिना पर वो मीलाद मनाने को बिदअ़त (सइया) व नाजाइज़ कहते हैं वो अहादीस दर्जे ज़ैल हैं–

सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–
मैं तुम्हें तक़वा इख़्तियार करने की वसीअ़त करता हूँ और हाकिमे वक़्त के फ़रमाबादार रहने की वसीअ़त करता हूँ ख़्वाह वो हब्शी गुलाम ही क्यों न हो क्योंकि तुम में से जो मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा वो बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ देखेगा पस तुम पर मेरी सुन्नत और मेरे खुल्फ़ा–ए राशिदीन हिदायत वालों की सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहना और दीन में जो नये काम जारी किये जायें उससे खुद को बचाये रखना बिला शुबा हर नई बात बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है।
(अबू दाऊद–5/506–4607)
(इब्ने माजा–1/41–42)
(तिर्मिज़ी–2/445–2676)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–जो हमारे दीन में कोई ऐसी नई बात पैदा करे जो इसमें न हो तो वो मरदूद और बातिल है।
(अबू दाऊद–5/506–4606)
(इब्ने माजा–1/32–14)

मज़कूरा अहादीस से बद अक़ीदा और कम फ़हम और नाक़िसे इ़ल्म लोग जो मफ़हूम मुराद लेते है वो बिल्कुल ग़लत है और सही मफ़हूम ये है कि दीन में वो नया काम बिदअ़ते ज़लालत और मरदूद है जो अहकामे कु़रान व सुन्नत के ख़िलाफ़ हो और किसी तरह से उसका तअ़ाल्लुक़ दीन से न हो या वो नये काम जो कु़रान व सुन्नत के हुदूद को तोड़ते हों या वो नये काम जिससे दीन या उम्मते मुस्लिमा को नुक़सान पहुँचे वो नये काम बिदअ़ते ज़लालत यानी बुरी बिदअ़त हैं और दीन में वो तमाम नये उमूर जिससे क़ौम या–

दीन को दुन्यावी या उख़रवी फ़वाइद हासिल हों या वो नये उमूर जो ज़रियाए सवाब या ख़ैर का बाइस बनें या वो नये उमूर जिनके सबब से लोग दीन और नेक आअ़माल की तरफ़ राग़िब हों और जिसके ज़रिये उनके दिलों में अल्लाह व रसूल व आले रसूल की शानो अ़ज़मत व मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो और दीन में वो नये काम जिसके सबब से लोग शर व बुराई और गुनाहों से तौबा व इजतिनाब करें और अल्लाह व उसके रसूल के फ़रमाबरदार बनें और कुरान व सुन्नत के अहकामात पर अमल पैरा हों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात को तर्क करें और आख़िरत की तरफ़ माइल हों तो ऐसे तमाम नये उमूर जो किसी तरीक़ से कुरान व सुन्नत के खिलाफ़ न हों तो वो तमाम नये काम बिदअ़ते हसना हैं यानी अच्छी बिदअ़त जो बाइसे अज्रे अ़ज़ीम हैं।

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के विसाल के बाद से लेकर आज तक हज़ारों शरई व मसाइली अहकाम व मामलात में वक़्त के तक़ाज़े व हालात के मद्दे नज़र

उनमें फेर बदल किया गया और दीन में कसीर ताअ़दाद में नये उमूर शामिल किये गये जिन्हें फुक़हा व आइम्मा और उ़ल्मा हज़रात ने उन तमाम कामों को जाइज़ क़रार दिया और दीन में शामिल नये उमूर और शरई व मसाइली अहकाम में फेर बदल ये उम्मत की भलाई और बेहतरी के लिये किये गये जो कि बारगाहे ख़ुदावन्दी में मक़बूल हैं और जिनके करने से मुसलमान फ़ैज़याब हुये और सवाबे दारैन के मुस्तहिक़ बने।

दीन में हर नया काम जिसकी अस्ल कुरान व अहादीस में न हो अगर उसे बिदअ़ते ज़लालत शुमार किया जाये तो दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़रूरियाती व इस्तेअ़माल में आने वाली हज़ारों चीज़े सब नाजाइज़ हो जायेंगीं क्योंकि वो कुरान व सुन्नत से साबित नहीं इसके अलावा तालीमाते दीन और शरीयत का ज़्यादातर हिस्सा बिदअते ज़लालत के जुमरे में आ जायेगा।

इस के अलावा इजतिहाद की तमाम सूरतें व क़यास व इस्तिंम्बात व इस्तिदलाल की जुमला शक्लें सब नाजाइज़ हो जायेंगी इसी तरह उ़लूम व फुनून मसलन उसूले तफ़्सीर व अहादीस व फ़िक़ा व उसूले फ़िक़ा की तालीफ़ व तदरीस व इ़ल्मे सर्फ़ व नह्व की ताअ़लीम सब नाजाइज़ व बिदअ़ते ज़लालत हो जायेगी क्योंकि इनकी अस्ल कुरान व अहादीस में नहीं है और न आसारे सहाबा से साबित है बल्कि इन्हें वक़्त और हालात के तक़ाज़े के तहत वज़अ़ किया गया है इसके अलावा मदरसों की ताअ़मीर व ताअ़लीम सब बिदअ़त व नाजाइज़ के जुमरे में आ जायेगी क्योंकि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) और सहाबाकिराम से मदारिस की ताअ़मीरात व ताअ़लीमात साबित नहीं है।

इसके अलावा एक मजलिस की इकट्ठी दी हुईं तीन तलाकों का तीन ही वाक़ैअ़ होने का हुक्म होना और ज़कात में कागज़ के नोटों और सिक्कों का चलन

व हज के लिये हवाई जहाज़ व रेलगाड़ी और बस व कार से सफ़र करना और चार सिलसिले यानी हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, व हम्बली इसके अलावा नमाज़े तरावीह का जमाअ़त से अदा करना, रोजे जुमा खुत्बे की अज़ान से पहले एक और अज़ान का इज़ाफ़ा होना कुरान को तीस पारो की शक्ल देना व कुरान के हरफ़ पर इअ़राब यानी ज़ेर ज़बर पेश वग़ैराह का लगाना दस्तार बन्दी करना और कराना सनद लेना व अहादीस को किताबी शक्ल देना वग़ैराह मज़कूरा तमाम उमूर कुरान व सुन्नत से साबित नहीं लेकिन जाइज़ व मुबाह हैं।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल क़ारी रिवायत करते है कि मैं हज़रत ऊ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के साथ रमज़ान की एक रात में मस्जिद की तरफ़ निकला तो लोग मुतफ़ार्रिक नमाज़ पढ़ रहे थे तो हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया मेरे ख़्याल में इन्हें एक क़ारी के पीछे जमा कर दिया जाये तो अच्छा होगा पस हज़रत उबई बिन कअ़ब–

(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पीछे सबको जमा कर दिया गया फिर मैं एक दूसरी रात को उनके साथ निकला और लोग अपने क़ारी के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे हज़रत उमर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने (इस इज्तिमाई इ़बादत को देखकर) फ़रमाया ये कितनी अच्छी बिदअ़त है।
(बैहक़ी शुअ़बुल ईमान–3/148–3269)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है – फिर हमने उनके पीछे इस राह पर अपने और रसूल भेजे और उनके पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा उन्हें इन्जील अ़ता फ़रमाई और हमने उनके सही पैरोकारों के दिल में नरमी और रहमत रखी और राहिब बनने यानी रुहबानियत (इ़बादते इलाही के लिये तर्के दुनियाँ और लज़्ज़्तों से किनारा कशी) की बिदअ़त उन्होने खुद बज़अ़ कर ली ये बिदअ़त सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहते हुये वज़अ़ की थी (इसलिये हमने उसे कुबूल कर लिया) लेकिन वो इसके जुमला तक़ाजों और आदाब का लिहाज़ क़ायम न रख सके पस उनमें से–

जो लोग ईमानदार थे हमने उनका अज्र अ़ता किया। (सू०–हदीद–27)

मज़कूरा आयते करीमा इस बात पर दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के सवब जो बिदअ़त ईज़ाद की जाती है वो बारगाहे खुदावन्दी में शरफ़े मक़बूलियत पाती है और बेहतर जज़ा का सबब बनती है ईसा अ़लैहिस्सलाम की उम्मत पर रुहबानियत फ़र्ज़ न की गई थी बल्कि बाद के लोगों ने इसे खुद बिदअ़त के तौर पर रज़ाऐ इलाही के हुसूल के सबब ईज़ाद कर लिया था तो अल्लाह तआ़ला ने उसे हराम या नजाइज नहीं फ़रमाया बल्कि जिन लोगों इस बिदअ़ते हसना का मुक़म्मल एहतिमाम के साथ उसके तक़ाज़ो पर खरे उतरे तो अल्लाह तआ़ला ने उनका ये अ़मल कुबूल फ़रमाया और उनको अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाया

मज़कूरा गुज़िश्ता दलाइल से वाज़ेह हुआ कि जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाना चिरांगां करना, जुलूस निकालना, महफ़िले–

मीलाद का मुनक़्क़िद करना, सबील करना, और इस पुरमसर्रत मौक़े पर सदक़ा ख़ैरात करना वग़ैराह सब जाइज़ व सवाबे दारैन है इसके अलावा हर वो काम चाहे नया हो या पुराना जिसकी हुरमत व मुमानियत कुरान व अहादीस से साबित न हो जाइज़ और मुबाह है यानी जिस अम्र पर अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने सकूनत इख्तियार की है वो वो जाइज़ है या सहाबा के क़ौल व अफ़आ़ल से जिस अम्र की हुरमत साबित न हो या जिस अम्र पर इज्माअ़ क़ायम न हो सके वो हर काम जाइज़ है।

–: बिदअ़त की अक़साम :–

बिदअ़त की दो क़िस्मे हैं बिदअ़ते हसना यानी अच्छी बिदअ़त और दूसरी बिदअ़ते सइया यानी बुरी बिदअ़त।

बिदअ़ते हसना की अक़साम:–

(1) बिदअ़ते मुबाह:– जो अ़मल बिदअ़ते हसना व बिदअ़ते सइया में से न हो और शरीअ़त ने जिसे मना भी न किया हो उसे बिदअ़ते मुबाह (जाइज़) कहते हैं जैसे– नमाज़ के बाद मुसाफ़ाह करना, उम्दाह उम्दाह खानों में वुस्अ़त करना और हर वो नया काम जिसकी शरीअ़त में मुमानियत न हो।

(2) बिदअ़ते वाजिबा:– वो अम्र जो नया तो हो लेकिन दीन की ज़रूरत बन जाये उसे बिदअ़ते वाजिबा कहते है जैसे– इ़ल्मे सर्फ़ व नह्व का सीखना और सिखाना ताकि उसके ज़रिये कुरआ़नी आयात व–

अहादीस के माअ़नी के सही पहचान हो और कुरान व अहादीस को समझने में आसानी हो इसके अलावा उसूले फ़िक़ा की तदवीन यानी अहकामे शरीअ़त को किताबी शक्ल में जमाअ़ करना ताकि लोगों को शरीअ़त के अहकाम को जानने व समझने में सहूलियत व आसानी हो और लोग उस पर अ़मल पैरा हों और कुरान मजीद के हरफ़ पर इअ़राब लगाना जैसे- ज़ेर ज़बर और पेश वग़ैराह लगाना ताकि अल्फाज़ों के समझने में आसानी हो और उसूले तफ़्सीर, उसूले हदीस, व फ़िक़ा व उसूले फ़िक़ा व दीगर उ़लूम की तालीम का इहतिमाम करना वग़ैराह।

(3) बिदअ़ते मुस्तहब:- वो नया काम जो शरीअ़त में मुस्तह्सन और पसंदीदा हो यानी वाजिब की तरह और शरअ़न ममनूअ़ न हो और मुसलमान उसे अच्छा और बेहतर जानते हों उसे बिदअ़ते मुस्तहब (मुस्तहसन, पसंदीदा, बेहतर) कहते हैं जैसे-मुसाफ़िर खानों व मदरसों का ईज़ाद

करना बा जमाअ़त नमाज़ तरावीह पढ़ना और हर वो काम जो शरअ़न मना न हो और जिसको मुसलमान अच्छा व बेहतर और बाइसे ख़ैर व सवाब जानते हों जैसे- जश्ने ई़द मीलादुन्नबी मनाना, मीलाद पढ़ना, अल्लाह तआ़ला के नेक सालिहीन व महबूब व मक़बूल बन्दों की यादगार मनाना, ताज़ियादारी करना व औलिया-ए -किराम व बुर्जुगानेदीन की मज़ारात पर हाज़िरी व नज़रो नियाज़ करना, अज़ान के बाद सलातो सलाम पढ़ना व बुर्जुगों के नाम से जलसे व उर्स का मुनक़्क़िद करना वग़ैराह हैं।

(4) बिदअ़ते मकरूहः- वो नया काम जिससे सुन्नते मुअ़क्क़दा का तर्क हो उसे बिदअ़ते मकरूह तहरीमी कहते हैं और जिससे सुन्नते ग़ैर मुअक्क़दा का तर्क हो उसे बिदअ़ते मकरूह तंजीही कहते हैं जैसे- मस्जिदों को फ़ख़्र के तौर पर ज़ैब व ज़ीनत से आरास्ता करना वगैराह।

(5) बिदअ़ते हरामः- वो नया काम जिससे कोई वाजिब तर्क हो जाये यानी वाजिब को मिटाने वाली या वो नया अम्र जो कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो जिससे दीन में फ़ित्ना व इंतिशार पैदा हो उस अम्र को बिदअ़ते हराम (सइया) कहते हैं इनमें अहले बिदअ़त की नफ़्सानी ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ (पैरवी) में नये मज़हब और फ़िरक़े बने।

मज़कूरा दलाइल से साबित हुआ कि हर नया काम बुरा नहीं है बल्कि जिससे दीन या क़ौम को दुन्यावी व उख़रवी नुकसानात का ख़दशा हो वो बिदअ़ते सइया है और हर वो काम जो शरअ़न ममनूअ़ न हो वो जाइज़ (मुबाह) है और हर वो काम जिससे मुसलमानों और दीन को दुन्यावी या उख़रवी फ़वाइद हासिल हों और वो काम कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ भी न हो तो वो काम बिदअ़ते हसना है यानी अच्छी बिदअत।

हदीस पाक में है–
जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– जिस शख़्स ने इस्लाम में किसी नेक काम की इब्तिदा की उसको अपने अ़मल का भी अज्र मिलेगा और बाद में अ़मल करने वालों का भी अज्र मिलेगा और उन आ़मलीन (अ़मल करने वालों) के अज्र में कोई कमीं न होगी और जिसने इस्लाम में किसी बुरे अ़मल की इब्तिदा की उसे अपने अ़मल का भी गुनाह होगा और बाद में अ़मल करने वालों का भी गुनाह होगा और उन आ़मलीन के गुनाहों में कोई कमी न होगी।
(नसाई–4/167–2558)
(मुस्लिम–6/264–6800)
(इब्ने माजा–1/102–203)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/248–2384)
(अब्दुर्रज़्ज़ाक–अल मुसन्निफ़–11/466–21025)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–2/350–9802)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है जिस काम को मुसलमान अच्छा जाने वो अल्लाह तआ़ाला के हाँ भी अच्छा होता है और जिस काम को मुसलमान बुरा ख़्याल करें वो अल्लाह तआ़ाला के हाँ भी बुरा व नाजाइज़ होता है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/174–4465)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/798–3602)
(मुस्नद अहमद–3/505–3600)

गुज़िश्ता सफ़हात पर कुरान व अहादीस और आसारे सहाबा और इल्मी दलाइल से ये बात साबित और वाज़ेह हुई कि ईद मीलादुन्नबी मनाना जाइज़ व सवाबे दारैन है इसके अलावा हर वो चीज़ जाइज़ है जिसकी मुमानियत कुरान व अहादीस में न हो या जिस अम्र पर सुन्नी सहीउल अ़क़ीदा उ़ल्माओं का इज्माअ़ क़ायम न हो सके यानी किसी अम्र की मुमानियत के इज्माअ़ पर उल्माओं का मुत्तफ़िक़ न होना भी उस अम्र के जाइज़ होने की दलील है

अल्लाह तआ़ाला हम तमाम गुलामाने रसूल व गुलामाने आले रसूल के दिलों को अपनी और अपने महबूब रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) व अहले बैत अत्हार की इंतिहाई मुहब्बत से लबरेज़ फ़रमादे और अपने महबूब व मक़बूल बन्दों से सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत का हामिल बनादे और दीनी उ़लूम को समझने और उस पर अमल पैरा होने और हक़ व बातिल और सही व ग़लत में इम्तियाज़ करने की तौफीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारी अ़क़्लो फ़हम को फ़ित्नों और शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे और हम तमाम मुसलमानों की अपने महबूब के सदक़े व तुफ़ैल बख़्शिश फ़रमादे और सिराते मुस्तक़ीम पर चलने और उस पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमादे और हमारा ख़ात्मा ईमान बिल ख़ैर पर हो। (आमीन)

-: तंम्बीह :-

(अवाम की इस्लाह के लिये कुछ ज़रुरी नसीहतें)

जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाना एक बेहतरीन अ़मल है जो बाइसे अज्रो सवाब है अलबत्ता इसमें कुछ बुराईयाँ व फ़ेअ़ले गुनाह भी शामिल हो गये हैं जैसे जुलूसे मीलादुन्नबी में बाज़ जगहों पर तेज़ आवाज़ में डी.जे. व मौसक़ी के दीगर आलात बजाये जाते हैं जिनमें मुँह से बजाने वाले बाजे (मज़ामीर) मुत्लक़न हराम हैं और जो बाजे मुँह से नहीं बजाये जाते उनका बजाना जाइज़ है जो कि अहादीस से साबित है लेकिन इतनी आवाज़ से बजाऐ जायें कि किसी मुस्लिम या ग़ैर मुस्लिम को उसकी आवाज़ से अज़्ज़ियत न पहुँचे क्योंकि हमारे लिये शरई हुक्म ये है कि लोगों को अज़्ज़ियत न पहुँचाओ बल्कि हत्तल इमकान उनकी तकलीफ़ो परेशानी को दूर करो और किसी को तकलीफ़ पहुँचाकर खुशियाँ मनाना कैसे जाइज़ हो सकता है और किसी को तकलीफ़ पहुँचाकर खुशियाँ मनाना बाइसे अज्र नहीं बल्कि गुनाह है।

और रहा सवाल मुँह से बजाने वाले बाजे (मज़ामीर) जो कि हमारी शरीअ़त में हराम क़रार दिये गये हैं और जुलूसे मुहम्मदी में तो इनका बजाना और भी ज़्यादा बुरा और गुनाहे कबीरा है एक तरफ़ तो हम अच्छा व नेक अ़मल नेक नियत से हुसूले सवाब के लिये कर रहे हैं और हम नेकियों के साथ साथ गुनाह भी कमायें तो ज़रा सोचो हमारे आअ़माल के दफ़्तर में नेकियों के साथ गुनाह भी दर्ज़ होते हैं तो इस तरह हम गुनाह कमाकर अपनी नेकियों को बर्बाद कर लेते हैं और हमें सिर्फ गुनाह और ख़सारे के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता है क्या हम अहमक़ हैं जो नेकियों के साथ साथ गुनाह भी कमाते हैं और घाटे का सौदा करते हैं और जुलूसे ईद मीलादुन्नबी तो बड़ी अ़ज़मतों का हामिल है और हम हराम काम करके उसकी तौहीन व बेअ़दबी करते हैं और हम कैसे सुन्नी मुसलमान हैं जो इस पर ज़रा भी ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते

हदीस पाक में हैं कि तमाम उम्मत के आअ़माल हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम)

की बारगाह में पेश किये जाते हैं तो ज़रा सोचो और ग़ौर करो जब हमारा ये अ़मल जब मुस्तफ़ा की बारगाह में पेश होता है तो फ़ेअ़ले हराम के बाइस हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को कितनी सख़्त तकलीफ़ पहुँचती होगी और आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते होंगे कि मेरी उम्मत मेरी विलादत की खुशी में हराम काम कर रही है तो इस तरह हम लोगों के साथ साथ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को भी अज़्ज़ियत दे रहे है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को अज़्ज़ियत देना गोया अल्लाह तआ़ला को अज़्ज़ियत देना है।

कु़रान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि जो अल्लाह और उसके रसूल को अज़्ज़ियत देते हैं उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है तो ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि हम क्या कर रहे हैं और किधर जा रहे हैं जुलूसे ई़द मीलादुन्नबी के साथ हराम व शैतानियत के काम कर रहे हैं पस हमें चाहिये जुलूसे ई़द मीलादुन्नबी

में शामिल तमाम ग़ैर शरई व हराम उमूर व दीगर खुराफ़ात से हम इज्तिनाब करें और बड़े अ़दबो इहतिराम के साथ जुलूस में शिर्कत करें और नात ख़्वानी और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत का ज़िक्र और नारा-ए-तकबीर व नारा-ए-रिसालत व नारा-ए-हैदरी को बुलन्द करें और ढ़ोल बाजे वो बजायें जो शरअ़न जाइज़ हैं यानी मुँह से बजाये जाने वाले बाजों और डी.जे. को मुत्लक़न तर्क कर दें और वो बाजे बजायें जिनकी शरीअ़ते मुताह्रा ने हमें इजाज़त दी है और इतनी आवाज़ में न बजायें जिससे किसी को अज़्ज़ियत पहुँचे।

ईद मीलादुननबी के पुर मुबारक मौके़ पर झण्ड़े और झण्डियों से गली और मकान व बाज़ार सजाये जाते हैं और मोटर बाहनों पर छोटी-छोटी झण्डी लगाईं जाती हैं मगर उनमें बाज़ झण्डे और झण्डियों पर कलमा-ए-तौहीद व रिसालत व अल्लाह व रसूल का इस्मे पाक लिखा होता है और अक्सर जिसका अदब व इहतिराम और

ताअ़ज़ीम नहीं की जाती और बाज़ मक़ामात पर तो ऐसे झण्ड़े कूड़े के ढ़ेर और गन्दगी में पड़े होते हैं और बाज़ लोग जब झण्ड़ा पुराना हो जाता है या फट जाता है तो लोग उसे फेंक देते हैं जो लोगों के पैरों के नीचे पामाल होता है ये बड़े शर्म व गुनाह की बात है कि अल्लाह व रसूल का इस्मे पाक जो खुशबू से मुअ़त्तर करके पाक मक़ामात पर होना चाहिये वो गन्दगी और कूढ़े के ढेर पर होता है अल्लाह व रसूल का इस्मे पाक चूमकर सर आँखों पर लगाना भी बाइसे अज्र है।

अल्लाह व रसूल का इस्मे पाक जो जन्नत के दरवाजों पर लिखा है अल्लाह के अर्श के पर लिखा है ये वो पाक नाम हैं जिनकी अ़ज़मत क़ायनात की हर शैः से अफ़ज़ल व अ़ाला है इन नामों के ज़िक्र में अ़ज़ीम सवाब है मगर अफ़सोस इ़ल्म की कमी और फ़ित्नों के इस दौर में अल्लाह व रसूल के इस्मे पाक की बेअ़दबी होना ये बड़े ग़ौर व फ़िक्र का मक़ाम है इसलिये हमें चाहिये कि जिस झण्ड़े पर अल्लाह व रसूल

का इस्मे पाक हो उसके इस्तेअ़माल से बचें ताकि अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी व ग़ज़ब और गुनाहे अ़ज़ीम से हमें तहफ़्फ़ुज़ हासिल हो वरना ये गुनाह हमें दोज़ख में ले जायेंगें जहाँ हम दहकती हुई आग में गिरफ़्तार होंगे और जलकर कोयला बन जायेंगे और रोज़े क़यामत हमारी इस गुनाहे अ़ज़ीम के सबब हमसे पुरसिश होगी और हम अल्लाह के अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और क़ब्र में भी हम पर इस गुनाहे अ़ज़ीम के बाइस अज़ाब मुसल्लत किया जायेगा।

इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह व रसूल के इस्मे पाक चाहे किसी चीज़ पर तहरीर हों हमें उनकी ताअ़ज़ीम व तकरीम करना चाहिये चाहे वो तारीख़ी कैलेन्ड़र हो या जन्त्री हो या कपड़ा हो या कागज़ या शक्ले ताअ़वीज़ हो यानी जिस चीज़ पर कुरानी आयत या अल्लाह व रसूल का इस्मे पाक लिखा हो तो हम उसकी हिफ़ाज़त व ताअ़ज़ीम अपनी जान से भी ज़्यादा करें ताकि हम अज्रो सवाब के मुस्तहिक़ हों और गुनाहे अ़ज़ीम से बच जायें।

विलादते मुस्तफ़ा की खुशी में जश्ने मीलाद मनायें मगर दायरा–ए–शरीअ़त के तहत कि कोई ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर उसमें शामिल न होने दें जश्ने ई़द मीलादुन्नबी को तमाम गुनाहों और बुराई व शर से पाक रखते हुये बड़े ज़ॉक व इहतिमाम व खुलूस और ताअ़ज़ीम व सच्ची अ़क़ीदत व मुहब्बत से मनायें ताकि हम इस अ़मल की बेहतर जज़ा पायें और घरों व गलियों और बाज़ारों में सजावट का इहतिमाम करें मगर बिजली चोरी न करें बल्कि बिजली मीटर से बिजली का इस्तेअ़माल करें अगर हमने चोरी की बिजली से सजावट की तो हमारी तमाम मेहनत ज़ाया हो जायेगी और हमें सवाब नहीं बल्कि हमारे नामे आअ़माल में गुनाह लिखा जायेगा।

अल्लाह तआ़ला अपने महबूब के सदक़े व तुफ़ैल हम तमाम मुसलमानों को शरीअ़ते मुताह्रा पर अ़मल पैरा रहते हुये जश्ने ई़द मीलादुन्नबी मनाने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और गुनाहों और शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे। (आमीन)

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपने महबूब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रूह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये और अपने हबीब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये- आमीन

नोट- जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें।

डा० आज़म बेग क़ादरी
09897626182